कमल - ताल
(गीत संग्रह)

কমল - তাল
(গীত সংগ্ৰহ)



कामेश्वर झा 'कमल'

কামেশ্বৰ ঝা 'কমল'

कमल-ताल

(गीत संग्रह)

श्री कामेश्वर झा 'कमल'

मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

कोलकाता

प्रकाशक : **श्री दयाशंकर मिश्र, मंत्री**
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
पं० सं० -S/6762 :: स्था० : 26 जनवरी, 1959 ई०
6-B, कैलाश साहा लेन, कोलकाता - 700 007
मो० : 9874258931

ISBN : 978-81-931089-4-9

संस्करण : आज़ादीक अमृत महोत्सव पर
14-8-2022 इस्वी

दाम : 200/- टाका

मुद्रक : **अरुण प्रिंटिंग प्रेस**
9-B, सिकदरपाड़ा स्ट्रीट
कोलकाता - 700 007
मोबाइल - 8617246661

Kamal Tal (Geet Sangraha) collection by
Sri Kameshwar Jha 'Kamal'.

समर्पण



स्व० श्रद्धेय पिता
दयानन्द झा



स्व० श्रद्धेया माता
गुलाब देवी

कँ श्री चरण मे सादर समर्पित।

प्रकाशकीय

मिथिलाक जाहि समृद्ध संस्कृति पर हमरा लोकनि गुमान करैत छी तकर एक प्रमुख भाग गीत - संगीतक अछि । सोहरसँ निर्गुण धरि विभिन्न संस्कार, पावनि-तिहार, ऋतु आ मास, प्राती आ साँझ, देव वंदन सँ पितर धरिक गीत, हँसी-मजाक सँ बाट चलबा धरिक गीत आदि विभिन्न पारम्परिक राग-भासमे प्रचलित रहल अछि । आ से किछु मिनटक गीतसँ लऽ भरि-भरि राति गाओल जाए वला गाथा - गीत धरिक परंपरा रहल अछि । परंपरा तऽ शास्त्रीय संगीतक सेहो बेस समृद्ध अछि । अमता, नवगछिया आदि कइएक टा संगीत घरानाक भारतीय शास्त्रीय संगीतमे महत्वपूर्ण योगदान एखनो दऽ रहल अछि । विशेष कऽ ध्रुपद गायन तऽ मिथिलाक धरोहर अछि । एकटा समयमे ध्रुपद गबैयाक बेस संख्या छल मिथिलामे ।

मिथिलामे संगीत परम्पराक महत्त्व आ समृद्धि लोचनक 'रागतरंगिणी' आ चंदा झाक 'मिथिला भाषा रामायण' सँ सेहो बुझल जा सकैए । ओना मारिते रास लोक-राग आब अलोपित भऽ गेल अछि । तथापि जे प्रचलित अछि तकरा जोगेबाक यत्न हेबाक चाही ।

गीत - संगीतक परंपराकें जोगेबाक आ आओरो समृद्ध करबाक चेष्टा सेहो होइत रहल । एहि क्रममे विभिन्न रचनाकार लोकगीत आ कीर्तन लिखैत रहलाह । एहन बहुत रास गीतक रचनाकारक पता नै, सबटा समाजक वस्तु भऽ गेल । मुदा गीत-संगीतकें

समृद्ध केनिहार एहन बहुतो रचनाकार भेलाह जिनका हमरा लोकनि जनैत छियनि । एहन रचनाकारक सूची बेस नमहर अछि ।

मैथिली गीत लिखनिहार एगो एहने महत्वपूर्ण नाम छथि श्री कामेश्वर झा 'कमल' । हिनक कवितो गेय होइत छनि । अपन गीत परंपराकें, अपन संस्कृतिकें सुरक्षित रखबाक लेल मिथिला सांस्कृतिक परिषद एहि खेप हिनक गीत-संग्रह 'कमल-ताल' प्रकाशित करैत गौरवान्वित अछि । प्रस्तुत संग्रहमे विभिन्न भावक गीत अछि । विभिन्न देवी-देवताक वन्दना, कोमल भावक गीत, देशभक्ति गीत आदि सहित विभिन्न अवसरक मधुर गीत सभक समावेश भेल अछि । हमरा विश्वास अछि जे परिषदक अन्य प्रकाशन जकाँ एहू पोथीक महत्त्व मैथिली साहित्यिक अभिवृद्धिमे सहायक तऽ हेबे करत जे पाठक लोकनि सेहो हलसि कऽ पढ़ताह । कमल जीकें शुभकामना ।

श्री दयाशंकर मिश्र
मंत्री
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

कमल केसर

उनैसम शताब्दी धरि मैथिली साहित्य प्राय: गीतक अवलम्ब सँ बढ़ैत रहल । बीसम शताब्दी मे आन विधा सभ मे रचना होअए लागल । तैओ गीत एकात नहि भेल । विभिन्न समारोह मे मंच सभ पर अनेक रीतिक गीत झमकए लागल, गीतोद्यान जेना हरियर छल तहिना हरियर रहल । गीतोद्यान मे पतझड़ नहि आएल, नहि आओत ।

नव नव रीति आएल, धुनि आएल, राग-भास आएल । आत्मा जे काल्हि छलै आइयो ताहि सँ ततेक भिन्न नहि छै ।

भक्ति आ शृंगार गीत विधाक प्राण तत्त्व थिक । देवी-देवताक स्तुति-वन्दन, भजन-कीर्तन लेल गीत छाड़ि आन गति नहि । तहिना प्रेम की थिक, मिलन आ विरहक स्वाद केहन छै से कहबा लेल सभ सँ अधिक सक्षम अछि गीत ।

सखि कि पुछसि अनुभव मोए

सएह पिरित अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होए ।

एहन अभिव्यक्ति, एहन सम्प्रेषण आन विद्या मे सम्भव नहि । से बुझलनि श्री कामेश्वर झा ''कमल'' । 2015 मे हुनक कविता संग्रह आएल ''बाट एकपेरिया'' । आइ हुनक गीतोद्यान मे अनेक रीति, अनेक राग-भासक गीत देखैत छी । भक्ति, शृंगार आ मैथिलीक अपन धुनि सँ सुसज्जित अनेक सुमधुर गीत । एहन राग भास जे आब हम सभ कदाचित बिसरल जा रहल छी तकरा सभक विलक्षण स्वरूप प्रस्तुत कएने छथि ।

भक्ति भावनाक निर्मल प्रवाह, मिलन-विरह केर सः स प्रतिपादन, विभिन्न अवसर आ प्रयोजनक अनुरूप गीत । ओना गीतक सम्पूर्ण असार-पसार एक ठाम सम्भव नहि । तथापि विविधताक परिसर मुग्ध करैत अछि, आश्वस्त करैत अछि । धुनि मे एतेक सामर्थ्य जे क्षण भरि लेल विसंगति सभक दंश बिसरि जाइत छी ।

एकैसम शताब्दी मे आएल विभिन्न उपादान - उपकरण मानव कैँ मशीन बना रहल अछि । किन्तु मन कैँ आइयो ओतहि शान्ति भटैत छै जतए काल्हि भेटैत छलै। एहि पोथी मे जे गीत सभ अछि से हमरा सभक तापित मन कैँ शीतल छाहरि दैत अछि। ई पोथी आश्वस्त करैत अछि हम सभ अपन कलात्मक संपदाक संरक्षण मे तत्पर छी, तत्पर रहब । यथासाध्य एकरा आर श्रीसम्पन्न करब ।

श्री नवीन चौधरी

गीत संग्रह के पृष्ठ भूमि मे .....

जल बुन्दे निपातेनः क्रमशः पूर्यते घटः
सः हेतु सर्व विद्यानाम् घनस्य च धर्मस्य च ।

(नीतिश्लोक)

आजुक आधुनिकताक अंध भाग दौग मे एखनो ई नीति श्लोक प्रासांगिक अछि। मानव मात्र के ई श्लोक बहुत महत्वपूर्ण जीनगी जीबैक कलात्मक शिक्षा दैत अछि। एहि श्लोक के हम अपना जीनगी मे यथासंभव आत्मसात कयनेऽ छी, आ एखनहुँ एहि श्लोकक एक-एक शब्दक अर्थक अनुसार अपन कर्तव्य पर भरोसा रखैत छी । कारण ई नीतिश्लोक हमरा सटीक जीनगी जीबाक लेल बहुत महत्वपूर्ण ज्ञानवर्धन कयलक अछि ।

हम प्रायः चालीस बरख सँ प्रवासीक जीनगी बिता रहल छी । प्रवास मे जखन कहियो, कखनो उदास वा हताशापन महसूस कयलहुँ, तखन-तखन स्व० पिता द्वारा देल गेल ई महत्वपूर्ण शिक्षा - ''जौं एकसरि कतहु रही आ मोन नहि लागय, तँ एकटा कोनो मनोनुकुल पोथी संगहि राखब, आ ओहि पोथीक करीयाक्षर सँ वार्त्तालाप क' अपना मोन के बहटारब'' सरिपहुँ स्व० श्रद्धेय पिताक देल ओ शिक्षा हमरा मार्गदर्शक के कार्य-कयलक अछि, आ हम अपन प्रवासक जीनगीक कंटक बाट पर चलैत, कुहेसक घोन के बीच अपन बाट के चिन्हैत, अरूणोदयक रक्तिम किरीणक प्रत्यशा मे, सदिखन, रहैत, सदा गुन-गुनाइत, यथा समयोचित कहियो एकटा गीत फुरा गेल तँ लिख लेलहुँ, कहियो कविता, तँ कहियो कथा, सेहो अपना मातृभाषा मैथिली मे ।

ई क्रम हमर प्रायः 1980 के दशक सँ चलि आबि रहल अछि । 1990 दशक बाद जखन हम कोलकाता (पूर्व मे कलकत्ता) स्थानांतरित भ' अयलहुँ, एहिठामक मिथिला-मैथिलीक प्रचार-प्रसार सँ हम बहुत प्रभावित भेलहुँ, आ अपन लेखन के गति देबा मे यथा संभव सक्षम भेलहुँ, स्थानीय आ किछु बाहर (कोलकाता सँ बाहर) हमर कविता, कथा आ गीत यथा समय प्रकाशित होइत रहल । यत्र-तत्र छिड़ियायल रचना, सभ के हम समेटि-बटोरि राखय लगलहुँ । ओहि समटल-बटोरल मे सँ गीतक रचना फराक कऽ हम एकटा गीत संग्रह पोथीक छोट-छीन आकार देल जकर नाम अछि ''कमल-ताल'' ।

एहि गीत संग्रह के पृष्ठभूमि मे हम स्पष्ट करऽ चाहब जे हमरा परिवार मे गीत-

नादक माहौलक महत्वपूर्ण स्थान रहल अछि । हमर स्व० पिता स्वयं मैथिलीक भक्ति गीतक रचना किछु कयने छलाह आ गबितो छलाह । हमर स्व० माय सेहो नीक गबैत छलीह, आ संगहि हमरा सँ जेठ तीन बहिन, भ्राता अनुज सेहो सभ-गीत नीक गबैत छथि । गीत सँ लगाब कमोबेस वयस अनुसार एखनहुँ छनि । हमरा माय के गामक अपन टोल मे सभ बारहमासा बाली काकी कहि बजबैत छलनि ।

घरक गीत नादक माहौल सँ प्रभावित भऽ आ गायन मे असफल रहितहुँ, हम एहि विद्या के रचना यथा समय प्रवासक जीनगी मे बरखे-बरख चाकरीक स्थानांतरण के डंस के झेलैत/सहैत लिखैत गेलहुँ, आशा छल जे गीत संग्रह मे गीतक संख्या सैकड़ो सँ बेसी कम सँ कम लिखि ली मुदा समय के देखैत दुखी मोन सँ कहय चाहैत छी जे संभव नहि भऽ सकल, ताहि लेल सदा हमरा आजीवन कचोट रहत, मुदा, तैयो सुधिबृंद, श्रोता/गायक आ गायिका लोकनि-के आश्वस्त करऽ चाहबैन्ह, जा धरि हमरा लेखनी हाथ मे धरैक क्षमता रहत आ अपने-लोकनिक आशीर्वाद भेटैत रहत हम गीतक मांग अनुसार नव-नव गीतक रचना आमरण करैत रहब । कारण हमरा अपन माटि पर गर्व अछि, जतय विद्यापतिक गीत रचना सँ समस्त, मिथिला तऽ अछिये सूदूर पूर्वोत्तर भारत, दक्षिण-उड़ीसा, पश्चिम दिल्ली, मुम्बई आ-बनारस के गली-गली मे हुनक गीत सस्वर गबैत किछु लोक एखनो भेट जाइत अछि ।

महाकवि महामानव विद्यापतिक रचनाक जतय अमैथिल समाज एतेक सम्मान दैत आबि रहल हो, ताहिठाम तँ ओ हमरा सभक आदि पुरूष छथि, जिनका बले मैथिली भाषा अपन अलगे पहिचान बनौने अछि । तिनका पर हमरा सभ गौरव करब अपना के धन्य बुझब, एकटा देवक देल वरदान बुझै छी ।

विश्व मे जे कोनो देशक लोक, समाज, जागरूक, सशक्त आ सुसंगठित देखऽ मे अबैत अछि, ओहि मे ओकर निश्चित रूप सँ साहित्यक भूमिकाक महत्वपूर्ण योगदान छै । बिनु साहित्यक कोनो समाजक कल्पना नहि कयल जा सकैत छैक । जकर जेहन साहित्यक गाछक जड़ि, जतेक मजगुत छैक, तकर निरोग तनाक कोखिक डारि सँ तेहने नव-नव पिनगी, यथा, लोककथा, लोक संस्कृति, नाटक, कविता आ लोक गीतक ह्रष्ट-पुष्ट संसार बटवृक्ष जेकाँ चहुँदिसि, चतरलैक आ पसरलैक अछि, आ अपन भू-भाग सँ बाहरो अपन अस्तित्क बोध करौलक अछि । ऐहने सन मजगूत साहित्यक संसार हमरो मिथिलावासी के अछि जकर अस्तित्व हमरा सभ प्रत्यक्ष रूप सँ त्रेतायुग सँ देख रहल छी । प्रत्यक्ष प्रमाण, बाल्मीकी रामायण आ तुलसीकृत रामायण अछि । आवश्यकता

छैक अपना के स्वयं के चिन्हब, अपन भाषा, संस्कृति के बुझब ।

गीतक विद्याक जतय तक जे संसार छैक से ई विद्या अपन एक अलगे विशिष्ठ स्थान बनौने अछि । एकर श्रोता प्रायः सभ वर्गक लोक मे भेटैत अछि - अमीर, गरीब, छोट - पैघ सभ के मोन मे बसैत अछि । वर्तमानहि नहि सतयुग सँ लऽ कऽ वर्तमान कलियुग मे ई विद्या सभक कंठ मे बैसल आबि रहल अछि । एकटा पौराणिक कथाक प्रमाण देबऽ चाहब - एक समय देवता लोकनि स्वर्ग मे सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन कयने छलाह, जाहि मे समस्त देवता लोकनिक संग, त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश सपत्नीक सेहो आमंत्रित छलाह । देवर्षि नारद जीक अहम गायन मे त्रुटि, बुझि स्वयं देवाधिदेव महादेव मंचस्थ भऽ अपन सस्वर गायकी सँ आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के आनन्दमय कऽ देलखिन्ह महादेवक, लयबद्ध स्वर लहरी सँ श्री बिष्णु भाव-विभोर द्रवित भऽ उठलाह, हुनक चरणक अंगूठा सँ भावविह्वल द्रवित द्रव्य प्रवाहित होमय लागल छल जाहि द्रवित द्रव्य के श्री ब्रह्माजी अपना कमंडल मे भरि लेल, ओ - द्रव्य गंगाक एक नाम विष्णु पदमबुजाक नाम सँ प्रचलित भेल । बात सत्य छै, गायन मे अहंकारक कतहु स्थान नहि छैक ।

हमर एकटा कविता संग्रह - **'बाट एक पेरिया'** 2015 मे प्रकाशित भऽ चुकल अछि । हम पुनः दोसर विद्या, गीत संग्रहक पोथी अपने सभक कर कमल मे प्रदान करैत आशा करैत छी जे सुधिजन/गायक लोकनि के ई पोथी अवश्य नीक लगतैन्ह / हम यथा संभव सभ तरहक गीत, यथा पोथी मे लिखल भेटत, अपना भरि नीक प्रयास कयल अछि । निवेदन अछि एहि गीत संग्रहक पोथी पर यथोचित मंतव्य दऽ हमरा उत्साहवर्द्धन करी ।

सादर ! जय मिथिला, जय मैथिली ।

कामेश्वर झा 'कमल'

सूची

1. गणेश वंदना

जय गणपति गजवदन गणेश
गिरिजा नंदन तनय महेश,
विघ्न सकल हरू हे विघ्नेश — गिरिजा नंदन .....

प्रथमहि पूजा तोर विनायक
मंगलदायक सर्व सुखदायक
लम्बोदर गणनायक ईश । — गिरिजा नंदन .....

मोदक भोग मूसक सवारी
भाल सिनूर चंदन मनोहारी
रिद्धि-सिद्धि दोऊ नावय शीश । — गिरिजा नंदन .....

सुनहु दया निधि विनती मोर
सकल "कमल" विघ्न करू दूर
हे सुरनायक जगत हितेश । — गिरिजा नंदन .....

●

2. गणेश वंदना (गणेश स्तुति)

जय-जय हो गणपति, गणेश गजानन,
प्रथम तोर पूजा गिरिजानंदन-२
तनय सदाशिव, करय जगवंदन-२
प्रथम तोर पूजा गिरिजानंदन । जय-जय हो ....

शीश मुकुट गर शोभे गज मोती-२
द्वार जड़य नीत मंगल ज्योति । मंगल ज्योति ....
कनक सिंहासन, मूसक वाहन-२
प्रथम तोर पूजा गिरिजानंदन-२ । जय-जय हो गणपति...

रिद्धि-सिद्धि दुइ चँवर डोलाबय -२
देव रिषी सभ स्तुत गावय, स्तुति गाबय ।
फूल पान अरपन, मोदक-प्रिय भोजन-२
प्रथम तोर पूजा गिरिजा नंदन-२ । जय-जय हो गणपति....

विद्या वारिधि, मंगलकर्त्ता-२
सकल विघ्नहर्त्ता, सर्व सुखदाता, सर्व सुखदाता ।
''कमल'' तोर चरणन, करय नितवंदन-२
प्रथम तो पूजा गिरिजानंदन-२ ।
जय-जय हो गणपति - गणेश गजानन
प्रथम तोर पूजा गिरिजा नंदन ।।

●

1. गंगा स्तुति

जय-जय सुरसरि विमल तरंगे
पाप विमोचनि पुण्य मति गंगे । टेक

हे भगिरथि एलहु तोर तीरे
पाप हरण करु, हरु मन पीड़े
मालपह नंदनी, भोगवती सीता
जहानवी, नलनी, बिष्णु पद अंगे । जय-जय-२ .....

जय हे सगर सुत सहस्त्रक तारिणी,
जय हे धरणि के तरल संवारिणी
भोगवती हे मालती त्रिदेशा
मंदाकिनी हे मातु त्रिपंथे । जय-जय-२ .....

'कमल' करय नित तोरहि धेयाने,
द्वादश नाम जपै नित सनाने
मुक्ति प्रदायनि सुधाबुन्न नीरे
अंत काल लगाएब नीज अंगे । जय-जय-२ .....

(नोट : गंगा, विष्णुपदी, जहनुतनया, भागीरथी, सुरनिम्नगा, त्रिपथगा, त्रिस्त्रोता, भीष्मसूर ।)

●

1. हनुमान वंदना

जय मारुतसुत, केसरी नंदन
अंजनी लाल सकल जग वंदन । जय मारुत .....

लाल ध्वजा रंग, लंगोट लाल
अंग सिनूरे रंग, आनन लाल । जय मारुत .....

रवि केर दर्प, क्षणहि कैल चूर
पूजथि देव, रिषी, डरय असुर । जय मारुत .....

लाँघि जलधि कपि, मारुत बंका
खोजल सीता, जारल लंका । जय मारुत .....

मूर्च्छित लखन लागल शक्तिबान
आनि संजीवनी, बचाओल प्राण । जय मारुत .....

राम भक्त प्रिय, संत हितकारी
'कमल' सकल, दुःख लेहु निवारि । जय मारुत .....

●

2. हनुमान वंदन

लाले-लाले ध्वजा तोर, लाल लंगोटा हो मंगल मूरती,
बीर अंजनी के लाला हो मंगलमूरती, हो मंगल मूरती
पवन के प्यारा पुत्र, केसरी के दुलारा हो, मंगल मूरती
बीर अंजनी के लाला हो मंगल मूरती, हो मंगल मूरती ।।
लाले-लाले ध्वजा ......

शीश मुकुट शोभे कुंडल, भाल चंदन -२
सदा गदा हाथ शोभे, बदन सुदर्शन, होऽ वंदन सुदर्शन ।
राम प्रिय भक्त दूत, जगत वलवीरा हो, मंगल मूरती ।
बीर अंजनी के लाला हो मंगल मूरती, हो मंगल मूरती ।
लाले-लाले ध्वजा ......

सिया खोजि अयलह, हरण कैल रावण-२
अक्षय के मारि तों, उजाड़ि देलह कानन, होऽ उजाड़ि देलह कानन
अभिमानी रावणक सोन, लंका के जारा हो, मंगल मूरती ।
बीर अंजनी के लाला हो, मंगल मूरती, हो मंगल मूरती ।
लाले-लाले ध्वजा ....

मूरछित लखन के लागल शक्तिवाण हो-२
आनि संजीवनी बूटी बचाओल प्राण हो, होऽऽ बचाओल प्राण हो
हरषि तुऊ गसि लेल, अंक रघुबीरा हो, मंगल मूरती
बीर अंजनी के लाला हो मंगल मूरती, हो मंगल मूरती ।
जय-जय हो बीर महावीर बजरंगा-२
'कमलक' सभ कष्ट हरु रणधीर हनुमंता, होऽऽऽ रणधीर हनुमंता
बल, बुद्धि, रक्षा करु, तोरहि एक सहारा हो, मंगल मूरती
बीर अंजनी के लाला हो मंगल मूरती हो मंगल मूरती ।
लाले-लाले ध्वजा ....

●

1. सरस्वती वंदना

हम नेन्ना अज्ञान शारदा भगवती
दियऽ हे विद्यादान माता सरस्वती (टेक)
करी सदा तोर ध्यान शारदा भगवती
दियऽ हे विद्यादान माता सरस्वती ..... हम नेन्ना .....

मन सँ तम कर दूर, बाट कर आलोकित
लगन रहय अध्ययन मे चित्त हो प्रफ्फुलित (टेक)
सफल रही इम्तिहान, शारदा भगवती,
दियऽ हे विद्यादान माता सरस्वती ..... हम नेन्ना .....

मात्-पिता गुरुपद मे शीश झुकाबी हम
मानव मन के भेद मूल मेटाबी हम (टेक)
सत् पथ करम प्रधान शारदा भगवती
दियऽ हे विद्यादान माता सरस्वती । ..... हम नेन्ना .....

हर आँगन मे ज्ञानक ज्योति सदा जड़य
रहय नेऽ एको निरक्षर साक्षर सकल बनय
नित नव अनुसंधान शारदा भगवती
दियऽ हे विद्यादान माता सरस्वती । ..... हम नेन्ना .....

धबल 'कमल' केर आसन हंसवाहिनी माँ
वागदेवी विशाला, पुस्तक धारिणी माँ
छेड़ू वीणा सुर तान शारदा भगवती
दियऽ हे विद्यादान माता सरस्वती ..... हम नेन्ना .....

●

2. सरस्वती गीत

हे माँ विद्या देवी शारदा,
किया देलहुँ, बिसरायल छी,
हम सभ नेन्ना छी अज्ञानी,
अहिंक शरण मे आयल छी..... हे माँ .....

नहिं जानि हम पूजा अरचन,
नहिं जानि तोर जप तप ध्यान
अनपढ़ कोना रहब हे मैया,
हमरहुँ दियौ नेऽ विद्या दान
पग-पग भरल अज्ञानक जड़तो,
ताहि मे लपटायल छी ..... हे माँ .....

सत्पथ पर नित सतत् चलि हम,
रहय नेऽ मन तनिको अभिमान,
मात्-पिता गुरुजन परिजन के,
सदा करी हम झुकि सम्मान ।
स्वच्छ, स्वस्थ्य निर्मल हो तन-मन,
ताहि मे पछुआयल छी ..... हे माँ .....

विद्या अध्ययन करी लगन सँ
नित करी नव अनुसंधान
जाति पाति के भेद नेऽ राखि,
मानव-मानव एक समान
घर-घर ज्ञानक ज्योति जराबी
एहि लेल हम पागल छी ..... हे माँ .....

हंस वाहिनी वीणा पाणि, साम सरस्वती अहिंक नाम
इम्तिहान मे सफल सतत् रहि, दियऽ अहाँ हमरा वरदान
चरण ''कमल'' गहल तोरे मैया,
पुत्र अहिंक अभागल छी ..... हे माँ .....

●

3. सरस्वती वंदना

जयति जय जय शारदे, हंस वाहिनी सरस्वती
जयति जय जय विशाले, वीणा पाणि भगवती (टेक)

दूर कर तम हो आलोकित, जगत नव विहान दे
ज्ञान ज्योति जराबी घर-घर नवल अनुसंधान दे । जयति जय...

मन हो निर्मल स्वच्छ हो तन बोल मधुर माँ तान दे
मातु-पितु गुरू जन हो परिजन करी सदा सम्मान दे । जयति जय...

सदा अडिग रहि सत्य पर माँ आत्मबल प्रदान दे
हो न मन विचलित विमुख तन चपल गतिमान दे । जयति जय...

हो सफल हम इम्तिहान मे माँ सदा वरदान दे
पुत्र 'कमल' अज्ञान मतिमंद मातु, विद्यादान दे । जयति जय...

मातु विद्यादान दे, मातु विद्यादान दे, मातु विद्या दान दे ।
जयति जय जय शारदे ...
जयति जय जय विशाले ...

●

1. गौरी आराधना

जय - जय जय गिरिराज किशोरी
मातु गजानन मंगल गौरी
विनती तोहे माँ करी करजोरी
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

नित अड़हुल फूल हम लोढ़ल
हार गूँथल नित तोरहि पूजल
शत अपराध छेमब माँ मोरी
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

जनक सुता जनि देल आशीष
मनवांछित वर मेटल कलेश,
अचल सौभाग्य श्री राम चकोरी,
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

देहु वरदान अनुरूप कल्याणी
शिव अर्द्धांगिनी अम्ब भवानी
चरण "कमल" पूजल नित तोरी,
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

●

3. सरस्वती वंदना

जयति जय जय शारदे, हंस वाहिनी सरस्वती
जयति जय जय विशाले, वीणा पाणि भगवती (टेक)

दूर कर तम हो आलोकित, जगत नव विहान दे
ज्ञान ज्योति जराबी घर-घर नवल अनुसंधान दे । जयति जय...

मन हो निर्मल स्वच्छ हो तन बोल मधुर माँ सान दे
मातु-पितु गुरु जन हो परिजन करी सदा सम्मान दे । जयति जय...

सदा अडिग रहि सत्य पर माँ आत्मबल प्रदान दे
हो न मन विचलित विमुख तन चपल गतिमान दे । जयति जय...

हो सफल हम इम्तिहान मे माँ सदा वरदान दे
पुत्र 'कमल' अज्ञान मतिमंद मातु, विद्यादान दे । जयति जय...

मातु विद्यादान दे, मातु विद्यादान दे, मातु विद्या दान दे ।
जयति जय जय शारदे ...
जयति जय जय विशाले ...

●

1. गौरी आराधना

जय - जय जय गिरिराज किशोरी
मातु गजानन मंगल गौरी
विनती तोहे माँ करी करजोरी
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

नित अड़हुल फूल हम तोड़ल
हार गूँथल नित तोरहि पूजल
शत अपराध छेमब माँ मोरी
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

जनक सुता जनि देल आशीष
मनवांछित वर मेटल कलेश,
अचल सौभाग्य श्री राम चकोरी,
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

देहु वरदान अनुरूप कल्याणी
शिव अर्द्धांगिनी अम्ब भवानी
चरण ''कमल'' पूजल नित तोरी,
पूर करू माँ मनोरथ मोरी ।। जय जय जय .....

●

2. देवी वंदना

जय जय अंबिके, जय जगदम्बिके,
जय महिषासुर नाशिनी,
जय अखिलेश्वरी जय नारायणी,
रक्त बीज विदारिणी (जय जय .....)

काली कराल महासुर घालक, जय जय खप्पर धारिणी
माहेश्वरी जय जय हे कराली
जय हे विंधवासिनी (जय जय .....)

मूँडमाल गला मे शोभित, मरघट शव केर आसनी,
इन्द्र सहित सुरगण सभ ध्यावत,
जिनकर दु:ख निवारिणी (जय जय .....)

शंख चक्र गदा कर शोभित, सिंहे उपर वासिनी
लक्ष्मी शारदा सहित विराजे,
भक्तन के भय हारिणी (जय जय .....)

कल्याणी, रूद्राणी, भवानी, चरण ''कमल'' तोर आस हे
हे भुवनेश्वरी पार लगाबहु
पुत्रक राखू लाज हे (जय जय .....)

●

3. देवी वंदना-1

जय जय अंबे, दुर्गे भवानी,
जय जगतारिणी, जय हे ब्रह्माणी (जय जय .....)

शत-शत सतत् हमर अपराध
क्षेमब हे मैया मन निरबाध (जय जय .....)

नाव हमर माँ पड़ल मझधार,
अहाँक बिना के करत उद्धार (जय जय .....)

देखल हे मैया माया तोर,
कुपुत्र पोटल धय ममता डोर (जय जय .....)

जनमक टूअर क्यो नहि मोर
हेरब हे मैया हमरी ओर (जय जय .....)

जे भल जानि से करू मात,
''कमल'' उधार अहिं केर हाथ (जय जय .....)

●

4. देवी वंदना-2

जय जय हे दुर्गा महरानी
जगजननी जग तारिणी हे
करुणामयी जगदम्ब भवानी
चरण शरण तोर आयल हे (जय जय .....)

जग भरि सँ ठूकरायल मैया
नाव हमर मझधार हे,
डूबा दियौ वा पार करू माँ
हाथ तोरहिं पतवार हे (जय जय .....)

नहिं जानि तोर पूजा अरचन
नहिं जानि तोर ध्यान हे,
अहाँ बिनु मैया नहिं क्यो दोसर
महिमा तोर महान हे (जय जय .....)

हम सेवक अज्ञान हे माता
शतत कयल अपराध हे,
छेमब हे अंबे मोर अवलंबे
''कमलकं'' सभ निर्गंध हे (जय जय .....)

●

5. देवी वंदना-3

जय जय मातु दुर्गा, जय जय हे भवानी
जय जय मात् अंबा, जगत महारानी (जय जय मात् .....)

उमा तो रमा तो तोंहि उग्रतारा
जया विजया तों तोंहि रूद्रधारा
शिवा शक्ति रूपा हे शैल शिवानी (जय जय मात् .....)

दिवाकर, सुधाकर, तोरहिं सँ प्रकाशित
सरोवर, समुंदर तोरहि सँ प्रवाहित
बतास-बसात तोरहि सँ ब्रह्माणी (जय जय मात् .....)

सदा दैत्य मारल तों दुष्ट संधारल
तों भक्त के तारल धरम प्रतिपालल
महाकाली, काली, कपाली, रुद्राणी (जय जय मात् .....)

तों निर्धन के धन देल आन्हर के आँखि
तों निर्बल के बल देल बाझन के कोखि
महामाया माया जगत कल्याणी (जय जय मात् .....)

होय पुत्र कुपुत्र सदा सर्व जानित,
माता कुमाता नेऽ होय प्रमाणित,
कुमति सँ सुमति दे माँ छी हम अज्ञानी (जय जय मात् .....)

छै जगदम्ब लाख हमर अपराध
मुदा पुत्र तोरहि क्षेमब निरबाध,
चरण मे शरण मे ''कमल'' जोरि पाणि (जय जय मात् .....)

●

6. भगवती गीत

मैया हमर दुःख कहिया जे सुनबइ (टेक)
अहाँ नहिं सुनबै तँ ककरा सँ कहबै (टेक)
के पतियेतै गे ककरा सँ कहबै (टेक)
ककरा सँ कहबै (मैया हमर दुःख .....)

बीच भँवर मे मोर फँसलै जे नैया (टेक)
जीनगी के नैया गे अहिं एक खेबैया (टेक)
काटि अहुरिया गे अहिं एक खेबैया (टेक)
अहिं एक खेबैया !
डूबेबइ अहिं, अहिं पार लगेबइ (टेक)

अहाँ नहिं ..... ककरा .....
के पतियेतै गे ..... ककरा सँ .....
ककरा सँ कहबै ..... मैया हमर दुःख ......

हम अज्ञानी माँ हे किछु नेऽ जनै छी (टेक)
पूजब अहिं लेऽ जवा कुसुम लोढ़ै छी (टेक)
माला गूँथइ छी गे, कुसुम लोढ़ै छी (टेक)
कुसुम लेढ़ै छी
शत अपराध हमर माफ करबै (टेक)

अहाँ नहि ..... ककरा सँ .....
के पतियेतै गे ..... ककरा सँ .....
ककरा सँ कहबै ..... मैया हमर दुख ......

अहिं मात्, दुर्गा, अहिं मात्, अंबा (टेक)
अहिं मात्, काली हे अहिं जगदम्बा (टेक)
अहिं शतरूपा हे अहिं जगदम्बा (टेक)
अहिं जगदम्बा
टूगर ''कमल'' के अंक मे लेबइ (टेक)

अहाँ नहिं ..... ककरा सँ .....
के पतियेतै गे ..... ककरा सँ .....
ककरा सँ कहबै ..... मैया हमर दुःख ......

●

7. माँ भगवती गीत

जय-जय महाकाली माँ,
काली महरानी माँ (टेक)
हम द्वार तोरहि अयलहुँ,
जय-जय जगतारनि माँ ।

जय-जय भुवनेश्वरी माँ,
जय-जय अखिलेश्वरी माँ,
रूद्राणी भवानी माँ,
जय-जय सर्वेश्वरी माँ, (टेक)

जय दुर्गति नाशिनी माँ,
जगदम्ब भवानी माँ,
तोर द्वार करी विनती,
हे कष्ट निवारिणी माँ । जय-जय ....

जय दुष्ट संधारिणी माँ,
जय असुर भयाउनि माँ,
जय चंडी - चामुण्डा माँ,
जय मुक्ति प्रदायनि माँ
जय भक्त के तारिणि माँ
उग्रतारा शिवानी माँ
अपराध कतेको माँ,
छेमव कल्याणी माँ - जय-जय
जय-जय वरदायनि माँ
वल सिद्दी प्रदायनि माँ
ममतामयी अंबा माँ
जगत अवलंबा माँ (टेक)
सभ कष्ट के हरि ले माँ
मन भक्ति सँ भरि दे माँ
पुत्र टूअर ''कमल'' के माँ
निज अंक लगा ले माँ ।
जय-जय महाकाली माँ ......

●

8. माँ दुर्गाक समदाओन

आऽऽरे, मिथिला नगरिया,
माँ दुर्गा के मंदीरबा -२
माँ दुर्गा के भवनमा

मैया आजु सुन्न केने जाय,
माँ मंदिरबा आजु सुन्न केने जाय ।

आऽऽरे, बरख दिनन सँ छलियै
आस लगौने हम
बाट निहारल हम,
मैया देतीह दर्शन आय
जग तारनि अओतीह मंदीरबा मे आय,

आऽऽरे, ऐतेक दिनन सँ छलियै
मैया के शरण मे हम,
मैया के पूजन मे हम
अंवा आजु छोड़ि चलि जाय,
नगरिया माय छोड़ि चलि जाय,

आऽऽरे, भोर सांझ मैयालऽ हम,
अरहुल फूल लोढ़लियै
सिंगहर हार फूल लोढ़लियै
किनका लऽ लोढ़ब आब जाय,
माँ काली आजु देल विसराय ।

आऽऽरे, मैया दुर्गा ''कमल'' जग जननी,
त्रिभुवन जग तारिणी,
मन मन्दीरबा लेबनि बसाय
मन मंदीरबा ध्यान लगाय ।

आऽऽरे, पुत्र बिनु माय कोना,
माय बिनु पुत्र कोना,
कोना पुत्र देतीह बिसराय,
जेतीह कतऽ पुत्र छोड़ि माय । ●

9. भगवती गीत

मैया सिंह पर सवार,
अबियौ हमरो घर द्वार,
छी निपि झल कौने हम, अपन अंगना ।

कर जोरि करी पुकार,
बिनती करबै माँ स्वीकार (टेक)
छी कोन्टहि पर ठाढ़े हम, अपन अंगना ।
मैया सिंह .....

यथा विधि मैया तुअ आसन बैसाख हे,
गंगाजल नित तुअचरण पखारब हे (टेक)
लोढ़ि फूल सिंगहार हार
गूँथब अरहुल फूल हार (टेक)
लाले चुनरी चढ़ाएब हम, अपन अंगना ।
मैया सिंह .....

धूप-दीप, यथाशक्ति भोग लगाएब हे
स्तुति भोर सांझ आरती उतारब हे (टेक)
अहिं छी शृष्टि के आधार,
हम नतमस्तक बारंबार (टेक)
अहि कैर ध्यान लगाएब हम अपन अंगना,
मैया सिंह ....

दुर्गा भवानी काली माँ जगदम्बा हे,
पुत्र ''कमल'' करे अहि एक अवलंबा हे (टेक)
महिमा अहाँ के अपरंबार,
जानय तीनो लोक संसार (टेक)
पूर करबै हे माता मोर मनकामना
मैया सिंह .....
अबियौ हमरो घर द्वार
छी निपि ....
कर जोरि .....
बिनती ...... ●

1. कृष्ण जन्म

आजु सोहाओन सखि, ऐलइ शुभदिनमा
से चलु बहिना हे, भेलइ नन्द के ललनमा .... (टेक)

आजु बधइया बाजइ, नन्द के अंगनमा
से चलु बहिना हे, भेलइ नन्द के ललनमा ..... (टेक)

सोना केर पलना, मे झूले कृष्ण ललना
सखि सभ देखि देखि करथि गुनगनमा,
आजु इनाम लेबइ, सोना के गहनमा,
से चलु बहिना हे .....

कानो मे झुमका लेबइ, हाथ के कंगनमा
नाको मे नथिया लेबइ पैर के पैजनियाँ
माथो मनटीका लेबइ, देह के आभूषणमा,
से चलु बहिना हे .....

मात् यशोदा आरती उतारे,
ग्वाल बाल जय जयकार पुकारे
नन्द जी मगन भय लुटाबे अभरणमा,
से चलु बहिना हे .....

सखि सभ हरषित, नन्द के अंगनमा
शुभ-शुभ आशिष देथि करथि दरसनमा
युगे-युगे जीबथु यशोदा तोहरे ललनमा
से चलु बहिना हे .....

●

2. कृष्ण जन्म गीत

चलु सखि देखन नन्द के ललनमा,
यशोदा जनम देल लाल हे,
आजु बधइया बाजइ, नन्द के अंगनमा-२
नाचय सकल ग्वाल वाल हे । चलु सखि .....

सोना केर पलना मे झूले कृष्ण ललना,
मंद मुस्कान मुख मनोहर नयना (टेक)
धुरमल केश घन श्यामल बदनमा-२
देखि के सकल नेहाल हे । चलु सखि .....

गोकुल नगरिया नंद बाबा के दुअरिया
देखब कन्हैया के जुराएब अंखियां (टेक)
देवरिषी हरषित करथि दरसनमा
देल आशिष गोपाल हे । चलु सखि .....

सोहर गाबथि नार, झूमथि अंगनमा
फूल बरखाबथि देव, नीले रे गगनमा (टेक)
नंद जी मगन लूटाबथि, अभरणमा
आजु दहिन भेल भाल हे । चलु सखि .....

धन्य हे यशोदा रानी धन्य तोर ललना
पूरण ''कमल'' के कैल, सकल मनकामना (टेक)
आरती उतारू मिलि कृष्ण भगवनमा
अवतार जगत प्रतिपाल हे ।
चलु सखि देखन .....
आजु बधैया .....

●

3. कृष्ण जन्म सोहर

भादब रातितम अष्टमी,
सुदिन सोहाओन रे-२
ललना रे यशोदा जनम देल लाल
गोकुल भेल पावन रे ।।

भेलइ नगर भरि शोर,
बाजैय बधैया रे - (टेक)
ललना रे ग्वाल वाल सभ नाचइ
नाचइ धेनु, गैया रे ।

ब्रह्मा, बिष्णु, महेश,
मनुज तन धारल रे (टेक)
ललना रे दरशन हेतु कन्हैया
गोकुल पधारल रे ।

सुर जन फूल बरखाबथि
नयन मन तिरपित रे - (टेक)
ललना रे कृष्ण लेलनि अवतार
रिसी मुनि हरखित रे ।
'कमल' गावय सखि मिलि सोहर
नन्द के अंगनमा रे ।
ललना रे नन्द आनन्द विभोर
लुटबथि अभरणमा रे ।

●

4. कृष्ण लीला

जल भरबै कोना आइ यमुना
श्याम पनिघट पर जा के बैसल छै ।
नहि जानि हुनक मोन महिमा - २
ओ तँ भोरहि सँ जा के जमल छै । जल भरबै .....

ओ तँ बैसल छै कदमक छैया,
ओतहि घुमि-घुमि चराबै छै गैया-२
ओ - तँ रहि - रहि के वंसुरी बजाबै-२
बाँसुरिया मे तान भरल छै । जल भरबै .....

धोखहि सँ चलली राधारानी
संग साथ ल सखिया सहेली सयानी-२
लाजे लाले लाले भेली राधा-२
मोहन से जे नयना लड़ल छै । जल भरबै .....

छोड़ू-छोड़ू नेऽ हाथ कन्हैया
सभ देखि रहल मोर सखिया -२
मृदु मुस्की भरल सभके मुखपर-२
हमरहि पर जे नयना गड़ल छै । जल भरबै .....

तनि सुनियौ नेऽ यशोमति मैया
बड़ा नटखट छै तोहरो कन्हैया-२
बीच बाटहि करइ बटमारी-२
फोड़ि देलक जे गगरी सकल छै । जल भरबै ....

बिनु श्याम बिना नहि राधा
प्राण एकहि छै तन आधा-आधा-२
राधेश्याम जगत लीलाधारी-२
पाप धरती सँ मुक्त ''कमल'' छै
जल भरबै ....

●

5. कृष्ण लीला

राधा-राधा सोर मचाबै
मोहन के मुरलिया-२
नहि जानि कौने दोग नुकयलि
राधा कौने कोठरिया-२ ।। राधा-राधा .....

एकसरि यमुना तट पर बैसल
मोहन बांसुरि बजा रहल -२
बिनु राधा के मोन ने लागनि
एकांती तन सता रहल -२
कान्हा आँखि छनि पथरायल सन-३
राधा के हेरैत डगरिया ।। राधा राधा .....

खोजथि राधा के व्याकुल कान्हा
सगर बाट आँगन कानन-२
खन कदंब तर, खन यमुनातट
खन वरसाना, वृंदावन-२
ग्वाल सखा सभ भेल दु:खित मन -३
अनशन पर गाय बछरिया-२ ।। राधा-राधा .....

परब्रह्म परमेश्वर कान्हा
मानव लीला देखा रहल-२
बाँसुरी नेहक नाम थिकी राधा
कान्हा आनन सदा जुड़ल-२
राधा कान्हा एकहि प्राण तन - ३
''कमल'' जगत मन बसिया ।। राधा राधा शोर मचाबै
मोहन के मुरलिया
नहि जानि कौने दोग नुकयलि
राधा कौने कोठरिया .....

1. राम विवाह गीत

धिया मोर रहली कुमारि हे एहि धनुषे कारनमा (टेक)
कोना के होयब उद्धार हे, एहि धनुषे कारनमा (टेक)
मातु सुनयना करुणा करै छथि
सखि सभ मिलि के हुनका बुझाबथि (टेक)
मन राखू रानी सम्हारि हे ....
एहि धनुषे कारनमा .....
धिया मोर ......

रावण सन महासुर जे थकि भागल,
देश विदेशक, नृपति सभ हारल (टेक)
केहन प्रण विदेहक विचार हे एहि धनुषे कारनमा
धिया मोर .....

सुनैना करूणा सुनि रामजी उठलाह
कर चाप धय ओ मंडप मे अयलाह (टेक)
लखन धैल धरा केर भार हे, एहि धनुषे कारनमा
धिया मोर .....

क्षणहि मे रामचन्द्र धनुषा के तोड़ल
पूरण कयल ओ सीता स्वयंवर (टेक)
करय जय-जयकार नर नारि हे, एहि धनुषे कारनमा
धिया मोर .....

सीया वरमाला गले राम पहिराओल
जनक जी विवाह कऽ सभ विधि पुजाओल
पूरण भेल ''कमल'' अभिलाष हे, एहि धनुषे कारनमा .....

2. राम विवाह गीत

सतरंगिया सपनमा पूरल बहिना
बाजऽ जनक नगरिया मंगल बजना (टेक)
अयला जनक जी द्वार श्री राम पहुँना
हे अयला जनक जी द्वार श्री राम पहुँना । सतरंगिया ....

संग सखिया सहेलिया लऽ, रानी सुनैना
सिया-बऽर के आनलि ओ परिछि अंगना (टेक)
मन पुलकित हरखे सजल नयना
हे मन पुलकित हरखे सजल नयना । सतरंगिया ....

श्यामल तन धारी राम अवधबिहारी
रूप चान सँ सुन्नरी सीता जनक दुलारी (टेक)
एक अनुपम जोड़ी गढ़ल विधना
हे एक अनुपम जोड़ी गढ़ल विधना । सतरंगिया .....

आजु मंगल जनकपुर शुभे हो शुभे
आजु मंगल अवधपुर शुभे हो शुभे (टेक)
आजु हरषित सुनैना नाचलि अंगना
हे आजु हरषित सुनैना नाचलि अंगना । सतरंगिया .....

आजु धन्य भेल मिथिला जनकपुर धाम
जतऽ दुलहिन सीता जी के दुल्हा श्री राम
भेल पूरण "कमल" सभ मनकामना
हे भेल पूरण 'कमल' सभ मनकामना
सतरंगिया सपनमा .....
बाजऽ जनक नगरिया .....

3. सीता माताक आरती

आरती सिया सुकुमारी के,
सुनैना जनक दुलारी के । टेक

धरा सँ प्रकट भेली अंबा -२
मैथिली जानकी जगदम्बा-२
कनक तन दिव्य छवि कोमल-२
चाने मुख नयन सिंधु निर्मल-२
हाथे पिणाक पुरारी के -२ ।। सुनैना जनक .....

लोढ़लि नित फूल निपलि गहबर -२
सदा पुजलि उमाशंकर-२
विदेहक ठानल स्वयंवर -२
माँगलि एकहि यथोचित वर -२
प्राण प्रिया अवधबिहारी के - २ ।। सुनैना जनक .....

पुत्रबधु भेली अवधपुर के -२
मान राखलि जनकपुर के -२
पति संग अरण्य कयल गमन -२
भेली जे हरण कयल रावण -२
रावणकुल देलनि उपटारि के-२ ।। सुनैना जनक .....

पुरुषोत्तम देल गेलीह त्यागल-२
तपस्या घोर, इष्टहि संवल-२
पति धर्मक कयलि रक्षा-२
नारी जाति देलनि शिक्षा-२
बीर लव-कुश महतारी -२ ।। सुनैना जनक .....

आरती 'कमल' करय वंदन-२
शत-शत अवनि सुता हे नमन-२
जन्म लिय पुनि मिथिला आंगन-२
जगत पुनि धर्मक हो स्थापन-२
जय हे आदिशक्ति अवतारी के
सुनैना जनक दुलारी के
आरती सिया सुकुमारी के
सुनैना जनक दुलारी के ।।

●

1. भजन

रे तपसी कहमा, तोहर देश,
कोन नृपति के तों पुत्र रे तपसी
जयबह कोन परदेश । रे तपसी .....

राजा दशरथ पिता हमर छथि
अवधपुर मोर देश, हे साधो - अवधपुर .....
वन गमन लय भवन हम छोड़ल
जायब अरण्य परदेश, साधो । जायब अरण्य .....

की तोहर छह नाम रे तपसी
की छह तोहर उद्देश्य, रे तपसी .....
के सभ तोहर संग रे तपसी
किया जयबह अरण्य परदेश - रे तपसी .....

राम चन्द्र मोर नाम हे साधो
आज्ञा पालन उद्देश्य ।
सीता, लखन संग छथि, साधो
मात्-पिता आदेश, हे साधो, मात-पिता .....

धन्य धन्य हे तपसी रामजी
धन्य अहाँ के उद्देश्य
कहत तुलसी 'कमल' सतत रही
मात पिता ह्रदयादेश, साधो
मात-पिता ह्रदयादेश ।।

●

2. भजन कीर्तन

गच्छामि गच्छामि, रामं शरणम् गच्छामि
गच्छामि गच्छामि कृष्णं शरणम् गच्छामि (टेक)

सीता शरणम् गच्छामि राधा शरणम् गच्छामि (टेक)
शंकर शरणम् गच्छामि, गौरी शरणम् गच्छामि (टेक)

हरे राम हरे राम राम राम सीताराम,
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण राधेश्याम (टेक)
जय कालीदुर्गा राधेश्याम गौरी शंकर सीताराम ।
गच्छामि .....

पाहिमाम् पाहिमाम् सीताराम पाहिमाम्,
पाहिमाम् पाहिमाम् राधेश्याम पाहिमाम् (टेक)

सीताराम पाहिमाम्, राधेश्याम पाहिमाम् (टेक)
भोले शंकर पाहिमाम्, गौरीशंकर पाहिमाम्

हरे राम हरे राम राम राम सीताराम
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधेश्याम (टेक)
जय काली दुर्गा राधेश्याम गौरी शंकर सीताराम .....
पाहिमाम् .....

मंगलम् मंगलम्, सीताराम मंगलम्
मंगलम् मंगलम्, राधेश्याम मंगलम् (टेक)
सीताराम मंगलम्, राधेश्याम मंगलम्
भोले शंकर मंगलम्, गौरी शंकर मंगलम्

हरे राम हरे राम राम राम सीताराम
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधेश्याम (टेक)
जय काली दुर्गा राधेश्याम गौरी शंकर सीताराम
मंगलम् .....

राम नाम केवलम् सीताराम केवलम्
कृष्ण नाम केवलम् राधेश्याम केवलम् (टेक)
सीताराम केवलम्, राधेश्याम केवलम्
भोलेनाम केवलम् गौरीशंकर केवलम्

हरे राम हरे राम, राम राम सीताराम
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधेश्याम (टेक)
जय काली दुर्गा राधेश्याम गौरी शंकर सीताराम
'कमल' जपु नित नाम, सीता राम राधेश्याम
बेड़ा करतह तोहर पार जग मे सुन्नर दुनु नाम ।
राम नाम केवलम् ..... कृष्ण नाम केवलम् (टेक)
हरे राम ....
हरे कृष्ण ....

3. निर्गुण भजन

ऊब-डूब, ऊब-डूब, डगमग-डगमग, करइ मोर नैया रे-२ ऽऽ
करइ मोर नैया रे ऽऽऽऽ

सुनरे मलहबा भैया ऽऽऽ-२ ऽऽऽ
फंसलहुँ हम मझधार रे ऽऽ
हाथ तोरे पतवार रे ऽऽ ।
ऊब-डूब .... डगमग ....

नदिया अथाहे, बहैऽऽ,
प्रवल जलधारा रे,
एकसरि तोर बिनु,
कियो नेऽ सहारा रे -२
मलहबा भैया रे ऽऽऽ-२ - ऽऽऽऽ

बहय विपरीते ऽऽऽ-२
बहय विपरीते पवन पुरबैया रे - ऽऽ
सुन-रे मलहबा भैया ऽऽऽ-२ - ऽऽऽ
हमर दु:खक नहि पाराबार रे
नैया फँसल मझधार रे
हाथ तोरे पतवार रे ....
ऊब-डूब .... डगमग ....

मतलबी दुनियाँ के,
झूठक नगरिया रे,
माया-जाल बाझि,
बोझि पापक गठरिया ऽऽऽऽ रे-२
मलहबा भैया रे - २

करऽ नेऽ पुछारि-२
करइ नेऽ पुछारि
कियो वयस बुढ़रिया रे ।
सुनरे मलहबा भैया-२, ऽऽऽ
भ्रम टूटल अहंकार रे, ऽऽऽ
फँसलहुँ हम मझधार रे,
हाथ तोरे पतवार रे ।
ऊब-डूब .... डगमग ......

कतेक केहन तों नित,
पार उतारल रे
हमरा बेरिया हो भैया,
किया अन्ठायल रे ऽऽऽ -२
मलहबा भैया रे -२ ऽऽऽ

करय "कमल विनती" ऽऽऽ २ ऽऽऽ
करय "कमल" विनती
तोहीं मोर जीनगीक खेबैया रे,
सुनरे मलहबा भैया ऽऽऽ-२
हमरहुँ कयले अंगीकार रे,
फंसलहुँ हम मझधार रे,
नैया लगादे किनार रे
हमरहुँ कय दे भवपार रे,
हाथ तोरे पतवार रे ।
ऊब-डूब ...... डगमग ......
कटय मोर नैया रे ......

●

1. नचारी

भोला बाबा अहाँ केर नाम के नेंऽ थाह (टेक)

कियो कहय बाबा अहाँ छी दानी
कियो कहय बताह (टेक) भोला बाबा .....

कियो कहय बाबा अहाँ छी दिगम्बर
कियो कहय नंगटाह (टेक) भोला बाबा .....

कियो कहय बाबा अहाँ छी भिखारी
कियो कहय बौराह (टेक) भोला बाबा .....

कियो कहय बाबा अहाँ छी मशानी
कियो कहय बिपटाह (टेक) भोला बाबा .....

तीन लोक केर स्वामी शिवशंकर
जे नित ध्यान धरताह (टेक) भोला बाबा .....

आक धथूर, भाँग बेलपाती चढ़ाकय
'कमल' आशिष पओताह (टेक) भोला बाबा .....

●

2. शिव विवाह

शिव योगी एला अंगना,
हे माय शिव योगी एला अंगना (टेक)

अंग विभूति गले मुँडमाल,
भाल चन्द्र तन मृगाक छाल (टेक)
देहो सोहरल साँपक गहना,
शिव योगी एला .....

परिछन चलली सभ सखिया,
वर देखि अचरज भेली सखिया (टेक)
मैना मूर्छित छथि अंगना,
शिव योगी एला .....

बर छै बूढ़ विपटाह बहिना
जहिना भूतक भेष तहिना (टेक)
जुलुम केलनि नारद वभना,
शिव योगी एला .....

गौरी के तप केर फल थिक ई
भंगिया बर लय बनलि बतही
साजू बजाबू मंगल बजना
शिव योगी एला अंगना
हे माय शिव योगी एला अंगना

●

3. शिव विवाह

सखि मोर गौरी छथि सुकुमारि
शिव संग कोना बियाहब ना (टेक)

बारहे वरख केर गौरी हमर छथि, से कोना बियाहब ना
सखि हे बर के वयस बुढ़ारि, से हम कोना बियाहब ना,
सखि मोर ....

गले रुद्रमाला शोभे, अंग विभूतिया, से कोना बियाहब ना
सखि हे साँप छोड़य फुफकार, से हम कोना बियाहब ना
सखि मोर ....

बाघ छाल ओढ़न बर के, मृगछाल परिहन, से कोना बियाहब ना
सखि हे जटा बहय गंगाधार, से हम कोना बियाहब ना
सखि मोर ....

घर नेऽ घरारी बर के खेती ने पथारी, से हम कोना बियाहब ना
सखि हे, गौरीक जीनगी हेतनि पहाड़, से हम कोना बियाहब ना
सखि मोर ....

कहथि नारद सुनु दिगंबर अयलाह ना,
'कमल' हे दिगंबर अएला ना
मैना हे शुभ - शुभ गौरी शिव बियाहु
स्वयं परमेश्वर अयला ना
स्वयं परमेश्वर अयला ना ।

4. शिव विवाह

चलु सखि देखन बरियाति, हे
मैना के अंगनमा (टेक)

वर के देखू सखि द्वार लागल छै,
अंग मे बस्त्र नहि थर थर कँपै छै,
बसहा पर सेहो असवार हे, मैना के अंगनमा । चलु सखि .....

काँख तर भाँगक झोरी झूलै छै
भस्म अंग, रूद्रमाल शोभै छै,
साँपो छोड़य फुफकार हे, मैना के अंगनमा । चलु सखि .....

कर मे त्रिशूल संग डमरु शोभै छै,
सिर ऊपर दूतिया के चानो शोभै छै,
जटा बहय गंगाधार हे, मैना के अंगनमा । चलु सखि .....

भूत परेतक साजल बरियाती
से देखि भागल सभ सरियाती
योगिन गाबइ मलार हे मैना के अंगनमा । चलु सखि .....

ओहेन कठिन तप गौरी जे कयलन्हि
तिनका ले ऐहन वर विधिना जे रचलन्हि,
मैना पिटइ छथि कप्पार हे, मैना के अंगनमा । चलु सखि .....

कहथिन नारद सुनु हे मनाइन,
एहि वर लय गौरी घोर तप केलनि,
शुभ-शुभ गौरी शिव विवाह हे,
पूर्ण भेल मनकामना,
पूर्ण भेल मनकामना ।

5. नचारी

नाच देखू हे गौरा, नाच देखू हे
शिव गेलाह बौराइ गौरा, नाच देखू हे (टेक)

जटा देल छिड़ियाय गंगा शीश हहराय,
कर सँ खसल त्रिशूल, घामे भस्म दलाए (टेक)
चान देखू हे गौरा, चान देखू हे
देखू चहुँदिसि अमरित टपकल जाए । नाच देखू हे .....

टूटि खसल रूद्रमाल, खुलि खसल मृगछाल
छथि बेसुध दिगम्बर नाचे बेहाल, (टेक)
साँप देखु हे गौरा साँप देखु हे,
देखू शिव के गरा सँ खसल झमाय । नाच देखू हे .....

शिव नाचथि छम छम, डमरु बाजए डम-डम,
शृंगी नाचए, भृँगी नाचए संगे नन्दी वेदम (टेक)
भूत देखू हे गौरा परेत देखू हे,
देखू शिव भंगिमा देखि डरे गेल पराए । नाच देखू हे .....

तीन लोक हलचल, ब्रह्मा विष्णु सकल,
नाच देखइ मे मगन दिक्‌पाल अचल
भाव देखू हे गौरा ताल देखू हे,
देखू सुधि बुधि देवरिषी देल बिसराए । नाच देखू हे .....

शिव धयला नट वेष, नाच 'कमल' होइत शेष
लगतनि भाँगक तलब, नहि बिलमता महेश (टेक)
भाँग पिसू हे गौरा भाँग पीसू हे,
शिव अओताह धरफराए गौरा भाँग पीसू हे । नाच देखू हे .....

●

6. शिव विवाह

कोना के परिछब के माय, वर देखि डर तँ लगैय,
देखल ने ऐहन जमाय, वर देखि डर तँ लगैय - (टेक)

भूत पिसाचक सजल बरियाती,
डरे नहि आबय कियो सरियाती, (टेक)
हमरो जियरा गेल डेराए, लग जाइत डर तँ लगैए ।
कोना के परिछब .....

वर के वदन पाँच तीन नयनमा
छाऊर लेपल छै सगरे वदनमा (टेक)
गंगो जटा हहराए, से देखि डर तँ लगैए ।
कोना के परिछब .....

घर ने घराड़ी वर के वयस बुढ़ारि,
कोना के बियाहब हम गौरी सुकुमारि
सूझय ने कोनो उपाए, वर देखि नयना झहरैए ।
कोना के परिछब .....

वर केर माय नहिं बाप छैन अपना
बूढ़ बरद छोड़ि सभ सुख सपना
मरती उमा बिष खाय, से सुनि देहो सिहरैए ।
कोना के परिछब .....

कहथिन नारद सुनु हे मनाइन,
गौरी एहि वर लय कठिन तप केलनि
नयना लियए अपनो जुराय, उमा शिव व्याह जे होइए
उमा शिव व्याह जे होइए । कोना के परिछब .....

●

7. शिव विवाह

ब्याकुल मैना करथि करुणा
केहन वर गौरा लिखल विधना (टेक)

दाँत टूटल छै गालो चोटकल
केशो पाकल छै बेमाइ फाटल
जटा मध्य गंगा ओ शीश चन्द्रमा
केहन वर .....

तन मे भस्म पहिरन मृगछाला
त्रिशूल डमरु कर गले रुद्रमाला
देहो मे सोहरल बासुकि गहना
केहन वर .....

टूअर वर के नेऽ घर छै घराड़ी
भीखे क आस नित बसहा सवारी
आंक् धथूरा ओ भाँग घोटना
केहन वर .....

कहथि नारद सुनु रानी मयना
वर के वगय देखि जुनि करी करुणा
त्रिभुवन स्वामी संग ब्याहु उमा,
परिछु बजाउ मंगल बजना
परिछु बजाउ मंगल बजना
केहन वर .....

8. नचारी

सुनु यौ शंकर, भोला दिगंबर,
पूजा करब हम खोलू केबाड़ी (टेक)

जानि ने जप तप पूजा ने जानि,
छी हम अज्ञानी हे शिवदानी,
आक् धथूरा बेलक पाती,
भाँग लेने ठाढ़ अहिंक पुजारी
सुनु यौ .....

छी हम अनाथे करू सनाथे,
कियो ने दोसर अहिंक आशे,
कतेक केहन के अहाँ जे तारल
किया जे हमरा देलहुँ बिसारी
सुनु यौ .....

सुनु मशानी औढ़रदानी
हमर मनोरथ अहिं जे जानि,
कतेक बखानब अहाँक महिमा
जगत के पालक हे त्रिपुरारी
सुनु यौ .....

जपै छी हर - हर, हे शिवशंकर
राखू शरण मे हे अभयंकर
अधम 'कमल' के अहिं जे तारब
अहिंक दुआरि गाबय नचारी
सुनु यौ .....

9. शिव विवाह

साजि अजब बराती, चढ़ि बसहा सबारी,
हिम द्वारे डमरूवा, बजाबै योगिया (टेक)

डाला साजि सखि संग वर के,
परिछन चलली मैना,
वर के बगय देखि भय मूर्छित,
नोर बहय दुहु नयना । हो रामा (टेक)
डरें भागि परायल, सराती सखिया,
साजि अजब .....

अंग उलंग चर्म टा पहिरन,
तन मे भस्म लगौने,
भाल चन्द्र संग गंग जटा मे,
सर्प गला लपटौने, हो रामा (टेक)
खाय छै, आक, धथूरा, भाँग बेलपतिया,
साजि अजब .....

चास, वास छै वित्तो भरि नहिं,
वरक, वयस बुढ़ारी,
चान सँ सुन्नरी, फूल सँ कोमल
गौरी मोर सुकुमारी, हो रामा (टेक)
कोना धिया बियाहब भिखारी भंगिया
साजि अजब .....

'कमल' कहथि नारद सुनु मैना,
शुभ दिन मंगल वेला,
तपसी लय तप उमा जे ठानलि
त्रिलोकि स्वयं वर अयला
गौरी शंकर बियाहु, जुराऊ, हिया अंखिया (टेक)
साजि अजब ......

●

10. नचारी

यौ बाबा यौ बाबा, सुनियऊ पुकार यौ,
सहलो ने जाइछै आब काँवर के भार यौ,
सहलो ने जाइछै आब, जीनगीक भार यौ (टेक)

बाट चलैत हमर डेग लटपटाइ छै,
देह थर थराइ छै, यौ मोन घबराइ छै,
गरइ पग रोड़ी, हो .....ऽऽ.....
गरइ पग रोड़ी बहए रक्तक पेमार यौ । सहलो ने .....

नेन्नहिं सँ, काँवर, गंगाजल बोझइ छी,
अहिंक चरण मे हम नित चढ़बइ छी,
भाँग-भोग, वेलपात - हो ऽऽऽ
भाँग-भोग वेलपात, धथुरा के हार यौ । सहलो ने .....

हर-हर अहिंक नाम बम बम जपैइ छी,
दुखिया के दुःख अहाँ क्षण मे हरइ छी,
औढ़र ढ़रन नाम - हो ऽऽऽ
औढ़र ढ़रन नाम जानय संसार यौ । सहलो ने .....

अनाथ केर नाथ अहाँ बैद्यनाथ शंकर
कष्ट हरण करू भोला दिगंबर,
गावय नचारी 'कमल' - हो ऽऽऽ
गावय नचारी 'कमल' अहिंक द्वार यौ

सहलो ने जाइ छै आब काँवर के भार यौ
सहलो ने जाइ छै आब जीनगी के भार यौ । यौ बाबा यौ बाबा...

●

11. नचारी (फगुआ गीत)

भाँग पीसू नेऽ गौरा हे आयल फगुआ (टेक)
हे आयल फगुआ, हे आयल फगुआ (टेक)
भाँग पीसू नेऽ ......

अनरोखे उठि आइ बमभोला पार्वती के मनाय
आक धथूरा आइ नेऽ भावै लियौ मीठ पाक बनाय (टेक)
फागुन के आयल छै-महिना हमरो मन बौआइ
हे गौरा हमरो मन बौआइ, हे गौरा हमरो मन बौआइ
पूआ छानू नेऽ गौरा हे आयल फगुआ (टेक)
हे छानू नेऽ पूआ हे छानू नेऽ पूआ (टेक)
भाँग पीसू नेऽ .....

शृष्टि सँ छुट्टी हम लेलहुँ एकदिनक करजोरि
आयल छै मधुमास वसंती कोना दियौ हमं छोड़ि (टेक)
हाथ लेबइ हम पिचकारी अहाँ अबीरक झोरि
अहाँ अबीरक झोरि हे गौरा अहाँ अबीरक झोरि (टेक)
रंग घोरू नेऽ गौरा हे आयल फगुआ,
हे घोरु नेऽ गौरा, हे घोरु नेऽ गौरा (टेक)
भाँग पिसू नेऽ .....

बहै वसंती पवन पुबरिया मन मे उठल तरंग
छान तोरि के नन्दी नाचइ, झुमइ मस्त भुजंग (टेक)
झूमइ मस्त भुजंग हे गौरा झूमइ मस्त भुजंग (टेक)

शृंगी - भृंगी गाबइ जोगीरा बजाबइ मिरदंग
बजाबइ मिरदंग हे गौरा बजाबइ मिरगंद (टेक)

फाग गाबू ने गौरा हे आयल फगुआ (टेक)
गाबू ने गौरा, हे गाबू ने गौरा (टेक)
भाँग पीसू नेऽ .....

हर गौरी मिलि खेलथि होरी शिवनगरी मे धमाल
गौरा के चुनरी लाल लाल रे भोला लाले लाल (टेक)
भोला लाले लाल, हो भोला लाले लाल (टेक)
ब्रह्मा विष्णुक "कमल" डोलल आसन तीनू लोक नेहाल
तीनू लोग नेहाल हो बाबा तीनू लोग नेहाल (टेक)
गुलाल लगाउ नेऽ गौरा हे आयल फगुआ
भाल लगाऊ ने गुलाल
सभके गौरा अहाँ भाल, (टेक)
सभके गौरा अहाँ भाल, सभके गौरा अहाँ भाल
भाँग-पीसू ने ....

●

12. नचारी

सुनु भोला बाबा, सुनु माता गौरी,
देखल तोर नगरी, अजगुत नगरी (टेक)
रहबै टहलुआ तोहर, राखि लेबै चाकरी
देखल तोर नगरी, अजगुत नगरी - सुनु भोला ....

तोर नगरी देखि मन ललचायल,
फूल बेलपात धथूराक, बाग जे लागल
चास भरल सगरे, भाँगेक - बखारी
देखल तोर नगरी, अजगुत .... सुनु भोला ....

शृंगी भृंगी नित भोरे उठै छै
बेलपात धथुरा, फूल लोढ़ै छै,
भाँग पिसय तोरा नित रगड़ि-रगड़ि
देखल तोर .... अजगुत .... सुनु भोला ....

कार्तिक गणपति, दूइ तोर बालक
कूदथि फानथि छवि मनमोहक
एक चढ़ि मोर एक मूसक सवारी
देखल तोर .... अजगुत .... सुनु भोला ....

कतेक दिन सँ छी, हम आश लगौने,
तोहर सुरतिया 'कमल' मोन मे बसौने,
हे त्रिपुरारि राखू अपन घर प्रहरी,
देखल तोर नगरी, अजगुत नगरी ...
सुनु भोला बाबा .....

●

13. नचारी

टूटली मरैया गौरी कोना रहति
शिव के नगरिया गौरी कोना रहति, - २ (टेक)
गौरी कोना रहती भवानी कोना रहती - २
नैहर पड़एती । टूटली मरैया .....

घर नेऽ घराड़ी शिव के खेती नेऽ पथारी - २
अन्नक दरश नहि भाँगेक टा बखारी -२ भाँगेकटा बखारी
नितदिन गौरी भाँग कोना पीसती -२
नितदिन भूखल, उपासे कोना रहती - २
भाँग कोना पिसती, उपासे कोना रहती -२
नैहर पड़एती । टूटली मरैया ....

अपने सदाशिव भेला मशानी -२
बसहा कें चिन्ता नेऽ घास गुरा सानी -२ , घास गूरा सानी ।
कोना नित गौरी, बसहा चरौती, -२
बसहा ले नित कोना सानी लगौती -२
बसहा चरौती कोना सानी लगौती-२
नैहर पड़एती । टूटली मरैया .....

अनका ले दानी शिव अपने भिखारी-२
भाँग पियाओल जे तकरा महल अटारी-२, महल अटारी ....
कोना के गौरी शिव के बुझौती-२
अपन गिरहस्थी कोना के चलौती-२ कोना के चलौती ....
कोना बुझौती शिव के, कोना घर चलौती-२
नैहर पड़एती । टूटली मरैया .....
देवाधि देव शिव औढ़रदानी-२

जगत कल्याणी गौरी माता भवानी-२ माता भवानी -१
तोरहि चरण मे, कमल कर विनती-२
राखहु शरण मे, हे शिवशक्ति-२
देहु मोहि भक्ति ....

टूटली मरैया .....
शिव के नगरिया ......

●

14. शिव नगरी

काँवर सजेबइ जेबइ बाबा नगरी -२
काँवर उठेबइ जेबइ बाबा नगरी-२
जेबइ बाबा नगरी, जेबइ शिवनगरी-२
देवघर नगरी । काँवर .....

सुल्तानगंज मे हम, गंगा नहेबइ-२
गंगा महरानी सँ बिनती जे करबइ-२
करजोरि मँगबइ ।

गंगाजल भरबइ हम भरि गगरी-२
गंगाजल बोझबइ, अजगैबि नगरी-२
गंगाजल गगरी, अजगैबि नगरी-२
देवघर नगरी । काँवर ....

देबइ जयकारा, बम बम के नारा - २
निरबल के बल बाबा नाम एक सहारा - २
बम भोला एक सहारा ।

साओनक झहरी चलैत बाट डगरी-२
चलैत बाट डगरी, गड़य पग बजरी-२
देवघर नगरी । काँवर ....

अनाथक नाथ एक बाबा बैद्यनाथे -२
गंगाजल चढ़ाएब शीश, संग गौरामाते-२
चरण नत् माथे ।

बाबा-के दुआरी, गयबइ-नचारी -२
गयबइ नचारी "कमल"
बाबा के दुआरी-२
देवघर नगरी । काँवर .....

●

1. छठि पावनिक गीत

दिनकर दिवाकर, दुखिया केर दीनबंधु,
ऊगियौ नेऽ करइ छी पुकार यौ ।

कर जोरि दिवा-राति, अहिं - केर ध्यान धयने,
जल बीच एकसरि ठाढ़ यौ, हे दीनानाथ ऊगियौ ....

धूप-दीप चहुमुख दियरा जराय देल,
घाटहि पर कोसिया, कुरबार यौ, हे दीनानाथ ऊगियौ ....

फल-फूल पकवान, यथाशक्ति अरपन,
करबइ अरघ स्वीकार यौ, हे दीनानाथ ऊगियौ ....

जे किछु त्रुटि भेल छेमब हे आदित्यनाथ,
करबइ हमरो उद्धार यौ, हे दीनानाथ ऊगियौ ......

बल बुद्धि, वंश बुद्धि ''कमल'' सभ समृद्धि देबै ।
माँगइ छी अँचरा पसारि यौ,
हे दीनानाथ ऊगियौ नेऽ करइ छी पुकार यौ ।

●

1. चौठी चानक गीत

उगियौ उगियौ चौठी चान,
सूरुज डूबला पर लै सांझ,
डाली पाती सजाओल अछि माँझ अंगना-२ (टेक)

अरिपन देल पर कलश बैसा के,
चौमुख दियरा धूप जरा के -२
पुरुकिया, पूरी, दही भरि छाँछ
मधुर फल केरा सहित सोहासं-२
भोग पायस लगाओल आछि मांझ, अंगना । उगियौ .....

माय हमर कयलि अहाँक उपास यौ,
यथा शक्ति पूजा विधि पूरण-करू आश यौ-२
दहि केर छाँछ लेने छथि ठाढ़
नमन करै छथि बारंबार,
अर्पण अहिं के उसगराओल, अछि मांझ अंगना । उगियौ ....

भंगबै मरर कोना बिनु भोग लगौने
विनती स्वीकार करू छी कलजोड़ने-२
जे सभ भेल यथा ओरियान,
त्रुटि पर देबइ देव नहि ध्यान-२
हम अज्ञानी जग बैसाओल अछि, मांझ अंगना । उगियौ .....

शंकर के शीश मध्य अहाँ शोभै छी
वेदागी के दाग भाल अहाँ मेटबै छी-२
सुधाकर हेम शशि रजनीश
प्रभाकर कला निधि सोमेश
शीश 'कमल' नमाओल अछि, मांझ अंगना । उगियौ .....

●

1. मिथिला वंदना

धरा अवस्थित एकटा गाम
जकर गर्भ मे चारु धाम
देवरिषी मुनि ध्यान लगावथि
सांझ प्रात नित दण्ड प्रणाम - (टेक)
सदा स्वर्ग सँ छइ स्वर गूंजित
जय जय मिथिला पावन धाम (टेक)
हे मिथिला हे तोहे प्रणाम - जय जय मिथिला पावन धाम।

अरुणोदय पहिने जे होइत छइ
सदा प्रथम तोरहि आँगन
शशि सुधामृत बरखाबइ छै
नित सदा तोरहि आँगन
चारु पहर नित स्तुत गाबथि
हुलसित वीणा-पाणि साम ।
सदा स्वर्ग सँ छइ ......
जय-जय मिथिला पावन धाम -२
धरा अवस्थित ....

कोशी कमला चरण पखारथि,
गंगा जल सँ नित स्नान
शीतल पवन नित चँवर डोलवथि,
भोजन, छप्पन नित ओरियान
पान-मखाने सँ मुख शुद्धि
फूलक सेज सदा विश्राम ।
सदा स्वर्ग सँ छइ ....
जय जय मिथिला ....
धरा अवस्थित .....

शस्य श्यामला अनुपम धरती,
सोनक चास भरल खरिहान
घर-घर कण-कण अन्नपूर्णा
भरल बखारी कोठी धान ।
सदा गोसाउनि तुलसी पूजित
संगहि श्रीपति शालीग्राम ।
सदा स्वर्ग सँ .....
जय-जय मिथिला .....
धरा अवस्थित .....

राजा जनक जतय ऋषि गौतम
याज्ञवल्क्य, कणाद विद्वान
मंडन वाचस्पति अयाची
कवि विद्यापति छथि मतिमान
एतहि ''कमल'' शिव चाकर उगना
दुल्हा दुल्हीन सीताराम
सदा स्वर्ग सँ छइ स्वर गूँजित
जय जय मिथिला पावन धाम-२
हे मिथिला हे तोहे प्रणाम-२ । जय जय .....
धरा अवस्थित ....

•

2. मिथिला वर्णन

हमर अंगना, छइ कमलाक तीर-२
कमलाक तीर छइ कोशीक तीर-२
छइ गंडक तीर छइ भूतहीक तीर-२
हमर अंगना छइ गंगाक तीर -२
हमर अंगना छइ कमलाक तीर .....

नित स्नान अछिंजल भरै छी
गोसाउनो निपइ छी हम, भनसो करै छी-२
मखान पनमा, छइ कमलाक तीर ।
हमर अंगना .....

हमरा अंगनमा मे अमुआक गछिया
छइ चाननक गछिया पर कुहकइ कोयलिया-२
पंचम सूरेना, छइ कमलाक तीर ।
हमर अंगना .....

हमरा अंगनमा मे रामजी पहुँनमा
सीता के सजनमा, चुमाबी नित दिनमा
लय दूभि धनमा छइ कमलाक तीर
हमर अंगना .....

गौतम कणाद जनक फुलवारी
अयाचीक बाड़ी "कमल" विद्यापति दुआरी-२
टहलुक उगना, छइ कमलाक तीर
हमर अंगना .....

●

3. मैथिली देश भक्ति गीत

धरती पर देश तोर स्वर्ग समान रे
जप-तप ओ यज्ञ भूमि वेद परमान रे
नमनीय माँटि जग करए गुनगान रे
बगल पड़ोसी मुदा सुनि फिरिसान रे (टेक)

चानन कर माँटि भाल पाग सिर सान रे
शत्रु पड़ोसी सँ रहिकए समधान रे
शस्त्र उठाले आइ तोर इम्तिहान रे - २ तोर इम्तिहान रे-३

माटि पुकारौ तोरा मैथिल संतान रे
जननी पुकारौ तोरा मैथिल संतान रे । (टेक)
धरती पर देश .....

जाहि सर्प गरल नहिं, नहिं ओ भुजंग रे
सिंधु ओ सिंधु नहिं जाहि नेऽ तरंग रे
ओ तरुआरि व्यर्थ भांजल नेऽ जंग रे
छइ जो जुआनी व्यर्थ जोश नेऽ उमंग रे - (टेक)

ओ खग खग नहिं, जानय उड़ान रे
ओ नदीक प्रवाह व्यर्थ जाहि ने उफान रे - (टेक)
आलस के त्याग बन्धु बन गति मान रे - २
बन गति मान रे - ३

माटि पुकारउ तोरा मैथिल संतान रे
जननी पुकारउ तोरा मैथिल संतान रे ।
धरती पर देश .....

पवन ओ वसात व्यर्थ जाहि ने तूफान रे
व्यर्थ ओ बदरा नेऽ बरखइ सूपान रे,
राखय ने हर पालो नहि ओ किसान रे
गान ओहि कविक व्यर्थ वीर रस ने तान रे । टेक

रण केर बाट बंधु चल सीना तानि रे -२
अरूणोदय पश्चिम कर पूरब सँ चान रे -२
छइ नेऽ असंभव जो मोन मे तो ठान रे -२
मोन मे तो ठान रे -३

माटि पुकारउ तोरा मैथिल संतान रे
जननी पुकारउ तोरा मैथिल संतान रे
धरती पर देश .....

बदलै छौ बैरी नित गिरगिट रंग रे
करबै ने माफ बंधु शत्रु उदण्ड रे
रिपु केर मुँह फोरि तोरि अंग-अंग रे
दुश्मन के दर्प चूरि करबै उलंग रे । टेक

मातृ भूमि रक्षा ओ भाषा सम्मान रे-२
अंगद सन पग 'कमल' अडिग चट्टान रे-२
नत हो नेऽ शीश जाए प्राण बलिदान रे-२
प्राण बलिदान रे-३

माटि पुकारउ तोरा मैथिल संतान रे,
जननी पुकारउ तोरा मैथिल संतान रे ।
धरती पर .....
जप तप .....

•

4. देशहित (मैथिली वर्णन)

भारत के वीर सिपाही आव भऽ जइयौ तैयार,
सीमा प्रान्त सँ दुश्मनमा के शीघ्र करू संहार । टेक

हम छी देखु चारू भाई, हिन्दु मुस्लिम, सिख ईसाइ-२
संकट के घड़ी मे माँ कय रहलीह पुकार ।
सीमा प्रान्त सँ ....

बहुत सतेलक हमरा दुशमनमा,
मेटाउ वीर शीघ्रे एकर नाम निशनमा-२
राखू लाज रे भैया, भारत माताक दुलार ।
सीमा प्रान्त सँ ....

जाधरि हम सभ सूतल रहबै, ताधरि ओ सभ तांडव करतै-२
जेना असम मणिपुर, जम्मू, पंजाब, बिहार ।
सीमा प्रान्त सँ ....

हम चाहै छी भाइ विश्वक शांति, नहि चाहै छी कत्तहु पसरै अशांति
सभ सँ भाईक नाता आ मीठगर व्यवहार ।
सीमा प्रान्त सँ ....

भारत के वीर सिपाही ......
सीमा प्रान्त सँ ....

•

1. भरदुतियाक गीत

आइ भरदुतिया, अरिपन देल अंगना -२
भैया नेऽ अयला, रहि गेलइ ओहिना-२ (टेक)

भोरे अनरोखे उठि अंगना निपलियै-२
भैया के नोतव, पान, पिढ़ियो ढौरलियै-२
यम के नोतए आजु सहोदर यमुना-२
भैया नेऽ अयला .....

मनक मनोरथ मनहि रहि गेलइ
केहन निठ्ठुर मोर सहोदर भेलइ-२
मांगल नेऽ पैसा, टाका नेऽ गहना-२
भैया नेऽ अयला ......

भट्टा बड़ी तिलकोर किया जे तरलियै
दही मटकूरि भरि किया जे पौरलियै-२
दियर दै छै ताना, ननदी उलाहना-२
भैया नेऽ अयला ....

भोर सँ तकैत बाट सांझ परि गेलइ
नैहर के आश, निराश मन भेलइ - २
'कमल' दुखित मन बहय दुहु नयना -२
भैया ने अयला, रहि गेलइ ओहिना
आइ - भर दुतिया .....
भैया नेऽ अयला ......

●

2. भरदुतिया गीत

एलइ भरदुतिया, एलियै नेऽ भैया
थाकि गेलइ अंखिया, बाट तकिते - तकिते
अधपर रतिया, केलियै जे निपिया,
नोतब भैया, नाम जपिते जपिते । २ एलै भरदुतिया ....

दूतिया इजोरिया कार्तिक महिना-
यम के नोतय आजु सहोदर यमुना-२
देल अरिपनमा पीढ़ि ढ़ोरि अंगनमा-२
पान मखनमा खोइछा, नोत लैते, लैते-२ । एलै भरदुतिया ....

तरल तिलकोर दही, मधुरो ओरियैलियै,
रहि गेलइ ओहिना जखन, अहाँ नेऽ ऐलियै-२
लागए असहजना, देवर जीक ताना-२
ननदीय उलाहना व्यंग बात सुनिते - सुनिते-२ । एलै भरदुतिया....

गाम छोड़ि अहाँ परदेश बसलियै-२
हम एक अभागलि बहिना से नहि बुझलियै-२
छल नहि किछु चाहना, सोन टाका गहना-२
दैब सँ अराधना कतहु रहु फलिते फुलिते-२ । एलै भरदुतिया....

बरख दिनन पर 'कमल' आबइ ई पावनि,
सहोदरा नोतब जानथि भौजीयो सोहगिन
मनक मनकामना, रहि गेलइ मन ओहिना
भरल नोर नयाना पोछल, अविरल बहिते बहिते .....
एलै भरदुतिया ....

●

1. चैताबर

बिति गेलै फागुन महिनमा हो रामा पिया बेइमनमा
एलथि नेऽ हमर सजनमा, हो रामा, पिया बेइमनमा (टेक)

फूल सभ खिलि गेलइ, प्रकृति संबरि गेलै-२
मह-मह करइ अंगना हो रामा - पिया बेइमनमा
बिति गेलइ .....

बैसल परदेसिया, पिया निरमोहिया-२
पाती लिखल नेऽ सुधिनमा, हो रामा, पिया बेइमनमा
बिति गेलइ .....

एक सरि अंगनमा, सून रे भवनमा - २
झहरय नीर नयनमा हो रामा, पिया बेइमनमा
बिति गेलइ ......

कुसुम खिलत पुनि बसंतक नाम सुनि -२
फिरत नेऽ बितल यौवनमा हो रामा - पिया बेइमनमा
बिति गेलइ .....

गाबै 'कमल' चैतावर, नवल बरख पर - २
अओता धनि तोहरो सजनमा, हो रामा, पिया बेइमनमा
बिति गेलइ फागुन ..... हो रामा
एलथि नेऽ .... पिया बेइमनमा

●

1. फगुआक गीत

नट : फागुन आय तुलायल हे गोरिया
चल नेऽ खेलब होरी-२
नटी : हम नहिं होरी खेलेबै हो रसिया
करबह तों बरजोड़ी - २
फागुन .....

नट : तोरा लं' साड़ी ओ लहंगा मंगाएब-२
चोली मंगाएब गोरी कंगना गढ़ाएब - २
सोना ओ चानी सँ छाड़ब हे गौरिया-२
चल नेऽ खेलब होरी
फागुन .....

नटी : पहिरब ने साड़ी तोहर लहंगा ओ चोली-२
हाथक कंगन नहि सोना ओ चानी-२
फाटल पुराने पहिरबै हो रसिया - २
करबह तो बरजोड़ी
हम नहि होरी .... करबह तो .....

नट : तोरा ल' लाल पलंगिया मंगाएब - २
चंपा चमेलीक सेज बिछायब - २
ओहिपर तोहरा सुताएब हे गोरीया - २
चल नेऽ खेलब होरी
फागुन ..... चल ने ....

नटी : लाल पलंगिया पर हम नहि सुतबै-२
भूँइया के उपर मे पटिया बिछेबै-२
हाथे सँ बेनिया डोलेबै हो रसिया - २
करबह तों बरजोड़ी
हम नहि ..... करबह तों .....

नट : हमरे शपथ गोरी पूछि ले मन सँ-२
घायल कै लेंऽ तो मदमातल नयन सँ - २
तोरहि सँ लगलै सिनेहिया गे गोरीया - २
चल नेऽ खेलब होरी
फागुन .....

नटी : बिनु देखै तोरा हमर लागइ नेऽ मनमा-२
राधा तोरहि हम तों मनमोहना-२
फागुन मे चमकइ इजोरिया हो रसिया-२
चल नेऽ खेलब होरी
फागुन .....

नट : फागुन आय तुलाएल हे गोरीया
नटी : फागुन आय तुलाएल हो रसिया
कोरस : चलने खेलब होरी - २

●

2. फगुआ गीत (ठहक्का)

सुनि फागुन वसंत, जोगी टोली रे उमंग
घोरि घोरि छानि भंग, पीबि योगिया मतंग - २

ढोल मजीरा मृदंग, झुमि नाचे रे जोगी-२
सभके अंगने अंगने, जोगिरा सुनाबे रे जोगी-२
जोगिरा - २
जोगिरा सर रऽऽऽ जोगिरा सर रऽऽऽ
जोगिरा सर रऽऽऽऽ गाबै रे जोगी –
सुनि फागुन बसंत ......
घोरि - घोरि .....

लाले-लाले रे चुनरि, लाले चोली रे पहिरि-२
नाक कनक बेसरि, लचकाबे रे कमरि-२

सभ रसिया के हिया, तरसाबै रे जोगी - ३
सभके अंगने - अंगने जोगीरा सुनाबै रे जोगी
जोगिरा - २
जोगिरा - सररऽऽऽ, जोगिरा सरर ऽऽऽ
जोगिरा - सररऽऽऽ, जोगिरा सरर ऽऽऽ - २
सुनि फागुन बसंत
घोरि घोरि .....

अहिवाति मन उदासी जानि पिया परवासी-२
लिखि - लिखि केर पाती, मनमा जे गेल थाकी-२

निरमोहिया के धनि सँ, मिलाबइ रे जोगी - २
सभके अंगने - अंगने .....
जोगीरा - ऽऽऽ -२
जोगीरा सररऽऽऽ जोगीरा सरर ऽऽऽऽ
जोगीरा सररऽऽऽ जोगीरा सरर ऽऽऽऽ
घोरि घोरि ......

जे छै बाल ब्रह्मचारी, नारी रूप दुत्कारी-२
किछु जानै ने - अनाड़ी, फिरइ बोने बोने झाड़ी-२

साधु - सुन्नरी सँ नयना लड़बाबइ रे जोगी-३
सभकें अंगने - अंगने ....
जोगीरा - जोगीरा
जोगीरा सरऽऽऽ...... जोगिरा सर ऽऽऽऽ....
जोगीरा सररऽऽऽ ..... गाबैरे जोगी ऽऽऽऽ २
सुनि फागुन बसंत ......
घोरि घोरि.......

कलि भ्रमर पिहानी, मास फागुनक जानि - २
बाटे - घाटे छेड़खानी, कोना करए मनमानी-२

प्रेम रसिया के हिया मे जगाबै रे जोगी-३
सभके अंगने ..... जोगीरा .....
जोगीरा - जोगीरा .....
जोगीरा सरर ऽऽऽऽ ...... जोगीरा सर ऽऽऽऽ......
जोगीरा सरर ऽऽऽऽ..... गाबै रे जोगी ऽऽऽऽ.....
सुनि फागुन बसंत ....

घोरि घोरि ....
रंग घोरि घोरि लाल, रंग लाले रे गुलाल - २
होरी खेलइ मे बेहाल, चहुँ दिसि रे धमाल - २
सभ रसिया के हिया जुराबै रे जोगी - ३
सभ के अंगने ...... जोगीरा .....
जोगिरा - जोगिरा
जोगीरा सररऽऽऽऽ, जोगीरा सर ऽऽऽऽ
जोगीरा सररऽऽऽऽ, गाबै रे जोगी - २
सुनि फागुन बसंत ....
घोरि-घोरि ....

●

3. फगुआ गीत (विरह)

बिति गेलइ फगुआ, कते हम कनलियै
पियाजी नेऽ अओता रामा, हम नहि जनलियै । टेक

गरीबक कोखि मे जनम देल विधना
पिया के देखक लेल, तरसि गेल नयना,
सखिया सभक कत्ते उलहना सहलियै ।
पिया जी नेऽ ....

बीतल तेरह मास काटि रे अहुरिया
बटिया निंहारल कत्ते पिया निरमोहिया,
फागुनक लाथे कत्ते पतियो लिखलियै ।
पिया जी नेऽ ......

बिसरि गेलाह मोहे जाइते विदेश,
पठाओल हमरा ल' - एको नेऽ सनेश
ऐना ओ कठोर हेता, हम नइ बुझलियै ।
पिया जी नेऽ ....

बरख दिनन पर आयल बसंत
खिलल कुसुम संग भ्रमर मतंग
एक सारि ''कमल'' पियासले रहि गेलियै
पिया जी नेऽ .....
बिति गेलइ ....
पिया जी ने ......

●

4. फगुआ गीत

कुसुमित कानन अबिते बसंत
हर्षित जन - मन उठल तरंग - (टेक)
कलि मुख चान मदन देखि दंग - २
हर्षित जन - मन ....
कुसुमित ......

कुहुकय कोकिल अमुआक डार
सगर नगर दय आयल हकार - २
आयल फागुन, होरि हुरदंग-२
हर्षित जन - मन ....
कुसुमित ....

जनि सजनीक सजना परदेश
होरिक लाथ लिखल संदेश-२
रभसल यौवन, कसमस अंग-२
हर्षित जन - मन ....
कुसुमित ....

चहुँदिसि लाल क्षिति अंबर लाल,
मचल 'कमल' चहुँ होरि धमाल-२
नाचि उठल जन, झालि मिरदंग-२
हर्षित जन - मन ......
कुसुमित ......

●

5. फगुआ गीत (गीतिका)

कुँहुँकए कोयल, चढ़ितेहि फागुन-२
किसलय तरुवर, चढ़ितेहि फागुन-२

फूल उपवन, सभ खिल खिलाएल...
बतास गमकल, चढ़ितेहि फागुन...
कुँहुँकए कोयल .....

फागे धुन पर जोगिरा गाबय,
जोगी नाचल चढ़ितेहि फागुनः
कुँहुँकए कोयल .....

अंग कसमस कलि मुसकुरायल
भ्रमर बहकल, चढ़ितेहि फागुन
कुँहुँकए कोयल .....

सिंदूर लाले रवि, चान चमकल,
सुधा बरिसल, चढ़ितेहि फागुन,
कुँहुँकए कोयल .....

मस्त जन गन संग मस्त 'कमल'
भंग गटकल, चढ़ितेहि फागुन ।
कुँहुँकए कोयल ....
किसलय तरुवर ....

●

6. फगुआ गीत

पिया मोहे पुनि घुरि आयल बसंत (टेक)

खिलल कुसुम उपवन चहुँ गमकए - २
चंचल कालि मुख मधुकर चुमए - २
कोकिल गाबए छन्द । पियामोहे - २
पिया मोहे ....

बाजत ढोल चहुँ झालि मजीरा-२
होरी खेलए सभ गाबि जोगीरा - २
पिबए गट-गट भंग पिया मोहे - २
पिया मोहे .....

गेल बसंत पहुँ घुरि आओत पुनि - २
खिलत कुसुम पुनि मास फागुन सुनि - २
यौवन पुनि फिरत नेऽ कंत, पिया मोहे - २
पिया मोहे .....

रभसल यौवन अंग-अंग कसमस-२
एक सरि 'कमल' फागुन लागए नीरस - २
लागय होरि बदरंग पिया मोहे - २
पिया मोहे पुनि घुरि आयल बसंत .....

●

7. फगुआ (गीत नाट्य)

(कोरस पुरुष) बरख दिनन पुनि फागुन घुरलै
उठलइ मन तरंग
घोरि-घोरि क पिसि पिबै सभ
दे गटा-गट भंग (टेक)
ढोल मजीरा, फाग गबै सभ,
जोगिया भेल मतंग - हे योगिया भेल मतंग-२
सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ-२

नायक : एलइ फागुन मस्त बहार जोगी जी,
करु बियाहक हमर जोगार जोगी जी -२
हम कते दिन, हम कते दिन, हम कते दिन रहबै कुमार जोगी जी-२
सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽऽ-२

(कोरस पुरुष) एकरा लगलै प्रेमक बोखार जोगी जी -२
शीघ्र करु नेऽ एकर उपचार जोगी जी -२
नायक : हम रहबइ - हम रहबइ-२ कत्ते दिन कुमार जोगी जी-२
सर ऽऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽऽऽ-२
एलइ फागुन मस्त ......

(योगी पुरुष) हो भ्रुम - हा भ्रुम, हा भ्रुम हो भ्रुम ....
ताक धिनाधिन ताक धिना धिन
ताक धिना धिन ताक २
ला ऽऽ ला ऽऽ झाडू अगरधूप .....
हम झाड़ब एकर भूत
लगा दे एकरा ऽऽ बभूत

हम सिद्ध अवधूत, हम सिद्ध अवधूत - २
जय काली कलकत्ता वाली
हमर वाक् कहि जाय नेऽ खाली
हमरा तोरा पर विसवास
हमर एत, नहि हो उपहास
शीघ्र बका दे, भूत भगा दे, हमर योग के नाम करा दे-२
ह......ह........ह........

(योगी पुरुष) एक योगिन छऊ तोरा पर सवार प्रेमी जी - २
(कोरस) शीघ्र करू नेऽ एकर उपचार, जोगी जी -२
नायक : हम रहबइ - हम रहबइ-२ कत्ते दिन कुमार जोगी जी-२
सर ऽऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ
एलै फागुन मस्त ....

नायक : हमरा दुलहिन के पता जोगी सुनियौ सम्हारि-२
हमरा भौजीक छोटकी, भैयाजीक सारि -२
हमरा कनखी, मुस्की सँ लेल बटमारी-२
चालि नागिनक अंग रसदार जोगी जी -२
करू बियाहक हमर जोगार जोगी जी
हम रहबइ, हम रहबइ कत्ते ......-२
करु बियाहक ....
सर ऽऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ-२

कोरस एकरा लगलै प्रेमक .....
शीघ्र करू ....
हम रहबइ ....
सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ

कोरस (नारी) फगुआ एलै रंग बरखइ छै,
अगबे लाल गुलाल,
सगरे नगरे लोक झुमै छै
मचलइ धमाल-२
ककरो भीजइ लाल चुनरिया, ककरो लाले गाल, होहो-
ककरो लाले गाल -२
सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ-२

नायिका : अयलइ फागुन मस्त बहार जोगी जी
करु बियाहक हमरो जोगार जोगी जी-२
आब रहलइ ने - आब रहलइ नेऽ-२ यौवन सम्हार जोगी जी
सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ-२

कोरस नारी लागल एकरहु प्रेमक बोखार जोगी जी-२
शीघ्र करु ने एकर उपचार जोगी जी -२
नायिका : आब रहलइ नेऽ यौवन सम्हारे योगी जी -२
अयलै फागुन .....

(जोगी नारी) हो, भ्रुम हा भ्रुम -२
ताक धिना धिन ताक धिना धिन ताक धिना धिन ताक....
ला ऽऽऽ ला ऽऽऽ अड़हुल के टूस्स,
दुनु कान मे एकरा ठूस्स-२
जौं लागल हेतो एकरा भूत-
नहिये बजतै ई झूठ-२
जय काली कलकत्ता वाली हमर वाक कहिं जाए ने खाली,
हमरा तोरा पर विसवास, हमरा एतए नहिं हो उपहास-२
शीघ्र वका दे भूत भगा दे, हमर जोग के नाम करा दे -२
हमर योग के नाम करा दे ...... हः हः हः ...

(जोगी नारी) भूत योगीया एक राज कुमार प्रेमी जी -२
कोरस नारी शीघ्र करू ने एकर उपचार जोगी जी -२

नायिका : आब रहलइ ने आब रहलइ ने-२ यौवन सम्हार योगी जी -२
करु बियाहक हमर जोगार जोगी जी -२
हम रहबै ...... हम रहबै कत्ते कुमारि योगी जी,
करु बियाहक ......
सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ-२

नायिका : एक श्यामे रंग गोर जे हमर चित्तचोर-२
पैसल हियरा मे मोर दै छै नित झकझोरि-२
ताकइ निशिदिन बाट, सांझ दुपहरि भोर-२
हम प्रेमक मारल लाचार जोगी जी -२
करु बियाहक हमर जोगार जोगी जी
आब रहलइ नेऽ - आब रहलइ नेऽ यौवन २

कोरस नारी एकरा लागल प्रेमक ....
शीघ्र करब ....
नायिका : आब रहलइ नेऽ - यौवन ....
सरऽऽऽ सर ऽऽऽऽ

नायक : लागए भूख ने पियास हम कत्ते फिरिसान-२
नायिका : लागए भूख ने पियास हम कत्ते फिरिसान-२

नायक : ओकर यौवनक रूप देखि तीर कमान,
नायिका : निनिया नयनक हरि लेल बेइमान -
हमरा हियरा मे मारइ छै कटारि जोगी जी-२

	हम रहबइ कत्ते दिन कुमार जोगी जी-२
नायक :	आब रहलइ ने यौवन सम्हार जोगी जी
नायिका :	करु बियाहक हमर जोगार जोगी जी-२
	सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽ

कोरस नारी :	दियउ दियउ यौ आशीष, हे यौ दाता जोगी राम-२
कोरस पुरुष :	सजना, सजनी, सँ भेंट, बियाहक शुभकामना-२
कोरस नारी :	जेना राधा संग श्याम जेना सिया संग राम - २
समवेत :	दियउ - दियउ नेऽ आशीष हे यौ दाता जोगी राम -
	सर ऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽ

योगी :	एलइ फागून मस्त बहार प्रेमी जी
कोरस (नारी व पुरुष)	सभ मिलि के चलु ससुरारि प्रेमी जी

जोगी पुरुष :	तोहर सजनी छउ तोरे सन लगार प्रेमी जी
जोगी नारी :	तोहर सजना छउ तोरे सन वेसम्हार प्रेमी जी
जोगी पुरुष :	दे रे रंग अबीर उपहार प्रेमी जी
जोगी नारी :	दे रे लाल चुनरि लहकदार प्रेमी जी

कोरस :	चलु फगुआ खेलऽ ससुरारि प्रेमी जी
	चलु फगुआ खेलय ससुरारि जोगी जी
	सरऽऽऽऽ सर ऽऽऽऽऽ

एलै फागुन ....

●

1. लगनी

कानि-कानि लिखलनि पतिया
पिता जनक के सीता
सुनु यौ बाबू, केहन घर हमरा देलहुँ बियाहल रे की ।

महल भरल संपतिया
भेलइ ई काल विपतिया
सुनु यौ बाबू, लागइ कनक-घट गरल समायल रे की ।

बन-बन फिरइ छी बाटे
शीत गरम बरिसाते,
सुनु यौ बाबू, पतिक, विछोहे, दैव सताएल रे की ।

बिअहितहुँ जौं घर दरिद्रे,
पहिरितहुँ पुराने गुदरिये ।
सुनु यौ बाबू, पति-संगे खटि खइतहुँ नित बेसाहल रे की ।।

करुणा भरल पढ़ि पतिया,
जनक नोरायल अंखिया
सुनु हे धिया जग केर रिति हमहुँ निमाहल रे की ।

नीके सुयोग्य-वर ताकल,
नीके बुझि ''कमल'' बियाहल,
सुनु हे धिया, विधिना के लिखल, नहि-जाय मेटायल रे की ।।

●

1. सोहर

सासुरहि बौआ जनम देल
सासुर मोर सोहर भेल रे
ललना रे तीन भुवन लोक जानल
पिया नहिं आयला रे ।

बारहे बरख पर पिया मोर लौटला
से दुअरहि ठाढ़ भेल रे,
ललना रे केहन छथि गौरवे मातल
मुख नहिं बाजथि रे ।

घर पछुआरहि मे सोनरा
की भैया तोही हित बसु रे
भैया हो गढ़ि दियउ सोना के कंगनमा
की धनि के बुझाएब रे ।

कंगना पहिरथु हुनक माय बहिनियाँ
पीसी पितिअनिया रे
ललना रे हम धनि वचन के भूखल
दरसन चाहिय रे ।

●

1. स्वागत गीत

आजु सुमंगल सोहाओन हे,
आयल दिन पावन
धन्य मोर भाग, घर आंगन हे
आयल छथि पाहुन ।। आजु ....

कर खाली करी हम स्वागत हे,
बैसथु सिंहासन
चरण पखारि गंगाजल हे,
धूप-दीप लय वंदन । आजु .....

पाग दोपटा धरि शीश - तन हे,
थिक रिति-मोर सनातन,
घर नहि भोजन छप्पन हे,
एक सागहि निवेदन । आजु .....

भाग्यवान आजु - हम सभतरि हे,
हे पाहुन भगवन् ।
आश ''कमल'' जीनगी भरिक हे,
पुनि घुरि देव दरसन ।
आजु सुमंगल ......
धन्य मोर ......

●

1. केश परिछन गीत

चान सन आनन, कुसुम तन रे,
मोर सुन्नर ललनमा

घुंघरल लट जनि घन सन रे
लट काटब हे हजमा
चानसन ....

बाबी हरखित केश परिछन रे,
बाबा लुटाबथि अभरणमा
तिनि घर कुलक भूषण रे,
धीरे काटब हे हजमा ....
चानसन ....

देव हम तुअ नव परिहन रे,
सभ पाँचहु-रे बसनमा,
छूरी गढ़ि सोने तन आभूषण रे,
नेग देबहु हे हजमा
चानसन ....

आजु सुदिन सोहाओन रे,
बाजय आंगन, बजनमा,
आशिष "कमल" हरख मन रे,
देबै ललन मोर हजमा
चानसन ....
घुंघरल लट ....

●

1. शरद गीत

बरखा रितु घुरि घर प्रस्थानल,
शरद आयल, महिं द्वार रे-२
कास फूल सँ धवलित दहो दिसि
गम-गम हरसिंगार रे । गम-गम हर सिंगार रे-२
बरखा रितु .....

निरमल जल सँ भरल सरोवर
खिलल मनोहर चहुँ अरविंद-२
हँस युगल मगन जलक्रीड़ा
जल विहार चुभकए स्वच्छन्द -२
चातकी तिरपित पी संग हर्षित कयलक सोलह सिंगार रे ।
कास फूल सँ ...... गम गम हरसिंगार रे ....
बरखा रितु ....

जितिया उपास मायक मृदु ममता
हो दिर्घायु हुनक संतान-२
देव पितर तरपन सँ तिरपित
दुर्गा पूजा शरद महान-२
नील कंठ दर्शन अभिलाषी जोरगर जिनक लीलार रे....
कास फूल सँ ...... गम गम हर सिंगार रे .....
बरखा रितु ......

शरद पूर्णिमा अमरित बरखए,
चानी सन नभ चमकए चान-२
नवल युगल केर आइ कोजगरा
चुमबय मिलि सभ ल' दूभिधान-२
पान, मखान, मधुर ल' परिसए, सगरे गाम हकार रे
कास फूल सँ .... गम गम हर सिंगार रे .....
बरखा रितु ....

कल कल कमला बहए बाध बीच,
लहरए हरियर चासक धान-२
झुन-झुन धानक शीश सँ झंकृत
नाचए हरषित मगन किसान-२
'कमल' शरद जन हिया जुराबय
हरषित जग संसार रे ।
कास फूल सँ धवलित दहोदिसी
गम-गम हर सिंगार रे ।
बरखा रितु घुरि ......
शरद आयल मही .....

1. बाल गीत

हम बालक भारतवासी, हम्मर देश महान,
चारि भाइ हम सिख इसाइ, हिन्दु मुसलमान,
जय हिन्द जय हिन्दुस्तान,
वंदे मातरम् -२ । हम बालक ....

अपनो पढ़बै सभ के पढ़ैबै,
देश मे हम साक्षरता अनबै-२
नहि रहतै अज्ञान देश मे,
एक सँ एक सभ बढ़ि के रहतै
गाँधी नेहरू लाल बहादुर, बीर सुभाष समान ।
जय हिन्द जय हिन्दुस्तान - बंदे मातरम् ।
हम बालक भारतवासी ....

बित्तो भरि, परती नहिं रखबै,
तन मन सँ हम खेती करबै -२
नहिं रहतइ गरीबी देश मे
निर्धनता के दूर भगेबै,
नव यतन सँ खेती करि के, भरबै कोठी धान ।
जय हिन्द जय हिन्दुस्तान - बंदे मातरम् ।
हम बालक भारतवासी .....

उत्तर मे गिरिराज हिमालय,
बहय अमृत जल गंगा
लालकिला के उच्च शिखर पर
रहतइ फहराइत तिरंगा-२
झुकय नेऽ देबै एकर शीश हम-२
गवां देबै निज प्राण-
जय हिन्द जय हिन्दुस्तान - बंदे मातरम् ।
हम बालक भारतवासी .....

2. बाल गीत

बंधु झिहिर झिहिर पानि पड़ए, चलुनेऽ नेहाइ-२

अंगना ओ बाट-घाट भरल छै गाँव-२
गाछ विरिछि सभ भेलै तलाब-२
डगर-डगर पानिक धार बहल जाय
बंधु झिहिर झिहिर-२
बंधु झिहिर ......

खेत मे हरबाह, बरद भिजइ किसान-२
कदबा पखार करै रोपइ छै धान-२
मेघ मल्हार राग नाचइ ओ गाए-२
बंधु झिहिर झिहिर-२
बंधु झिहिर ......

अयलै साओन चहुदिसि भेलै शोर-२
वनचर दै ताल पर नाचइ छै-मोर-२
व्याकुल पपीहा नित पी-पी रटाइ-२
बंधु झिहिर झिहिर-२
बंधु झिहिर ......

कारी कारी बदरा के मोती सन बुन्न-२
एक बुन्न पानि लय पिरथी छै सुन्न-२
बाँचल परान जीवक हिया जुराइ-२
बंधु झिहिर झिहिर-२
बंधु झिहिर ......

●

3. बाल गीत

दालि ददरी, मरीच ददरी-२
बौआ, बाबा पोखरि मे, तोरा बड़ मछरी
बड़ मछरी रे बड़ मछरी-२
बौआ बड़ मछरी । दालि ददरी .....

आ बौआ मोरे आ - आ आ
डेग बढ़ारे बौआ ता - ता - था
नाच देखा रे, बजा रे थोपरी - २ बौआ ....
बजा-रे थोपरी - २, बजा रे थोपरी । दालि ददरी ....

मोर बौआ खेलइ अटापटा
हमरा बौआ के पाँच बेटा-२
सभ पढ़ि लिखि करइ चाकरी-२ बौआ ....
करइ चाकरी -२ करइ चाकरी । दालि ददरी ....

आरे चन्ना आ आरे आ
बौआ के मामा तो लेने आ -२
बाटी मे दूध भात आर मिसरी-२ बौआ .....
आर मिसरी-२ रे आर मिसरी, आर मिसरी । दालि ददरी ....

हम्मर बौआ पढ़े अ आ-इ-
पढ़ि लिखि बौआ बनतइ हाकिम जी - २ बौआ ....
मोटर सवारी चलैत डगरी-२
चलैत डगरी -२ रे चलैत डगरी-२ । दालि ददरी .....

●

4. बाल गीत

चिड़ैया - गा - गा - गा, चिड़ैया, गा - गा - गा
गाछक ऊपर तोहर वास रे,
स्वच्छंद उड़ऽ तो निलाकाश रे,
नव करतव देखा
चिड़ैया गा ....

नित अनरोखे भोर उठइ छें
नित परिश्रम घोर करइ छें -२
बिनु संचय के बात करै छें,
दिन भरि दाना चास चुगै छें
हंसि-के करै निरबाह ......
चिड़ैया ......

फुदकि, फुदकि के तो चलैत छें,
सभहक मोन के तो मोहैत छें,
दुसह सूर्यक ताप सहै छें,
प्रकृतिक झंझाबात झेलैत छें ।
नहि कोनो परवाह .....
चिड़ैया - गा ....

तों निरभय नित सिंधु नघै रे,
क्षिति, क्षितिज अंतरिक्ष घुमै रे, -२
सुना गीत तों पर भाती रे,
पंचम सुर मे दिन राति रे
सभ के मोन लोभा
चिड़ैया - गा - गा - गा ......

●

5. बाल गीत

कोरस : सोन चिड़ैया, सोन चिड़ैया
कतय, कतय घुरि अयलहुँ हे,
कोन देश परदेश घुरि अयलहुँ,
कोन सनेसा लयलहुँ हे ....

सोनचिड़ैया : हम घुरि अयलहुँ पुरूब, पश्चिम,
उत्तर सँ पुनि दक्षिण हे,
मोन नेऽ लागल कत्तहु हमरा
घुरि अयलहुँ घर अप्पन हे ।।

कोरस : सोन चिड़ैया, सोन चिड़ैया
की सभ ओम्हर देखलहुँ हे,
कोन बस्तु दुर्लभ कीनि अनलहुँ,
की नीक भोजन कयलहुँ हे ।

सोनचिड़ैया : नहि कतहु दुर्लभ किछु भेटल,
भरल पेटार घर अप्पन हे,
भोजन कत्तऽ पाबि चहटगर
अप्पन घरक सन छप्पन हे,

कोरस : सोन चिड़ैया, सोन चिड़ैया
अहाँ सन हित नहि दोसर हे,
शिक्षा हमरो दियउ उचित बुझि,
लोक मे होयत मोजर हे ।

सोनचिड़ैया

पढ़-लिखू मोन सँ बौआ
गुमान करी निज भाखा हे ।
अप्पन माटि स्वर्ग बरोबरी
परवासे थिक धोखा हे ।

कोरस :

सोन चिड़ैया, सोन चिड़ैया
खेलु नुक्का चोरी हे ।
खेलु घारा जोरी हे
अहाँ नुकाउ गाछ बिरिछि पर
हम अंगना घर कोठरी हे ।
सोन चिडैया २

●

6. बाल-गीत

आ-रे चन्ना, आ-रे आ
हमरा अंगना आ-रे-आ
हमर बौआ नित तकइ छह,
कतय नुकेलह आ-रे-आ ।
आ-रे चन्ना ....

अन्हरिया मे झिल-मिल, झिल-मिल,
नित चमकइ रे तारेगण
तोरा बिनु सुन्न लगइ रे,
अंगना हम्मर नील गगन -२

आ-रे-चन्ना आ-रे-आ
हमरा अंगना आ-रे-आ

हमर बौआ नाम रटइ छह,
अप्पन सूरत आबि देखा ।
आ-रे चन्ना .....

मामा हम्मर कहिया उगतइ
पूछइ सांझ - भोर रे

माँझे अंगना ठाढ़ खोजइ छइ,
तोरहि चहुँ ओरि रे -२
आ-रे चन्ना आ-रे-आ
हमरा अंगना आ-रे-आ

सोना के कटोरिया मे,
दूध-भात लेने आ ।
आ-रे चन्ना .....

घूटूर-घूटूर बौआ हमर
खाइ छइ दूध-भात रे
टूकुर-टूकुर ताकइ चन्ना,
मामा-मामी साथ रे-२

आ-रे चन्ना, गा-रे-गा,
हमरा अंगना गा-रे-गा
बौआ हमर नाथ देखाबइ
ता, थैया, ता-ता-थैया ।
आरे चन्ना .....
हमरा अंगना ....

1. गीत (लोकगीत)

बंधु रहबइ परवास मे यौ आर कत्ते दिन
छोड़ि गाम घर चास यौ आर कत्ते दिन ।-२ (टेक)

अंगना के चहुँ दिसि वान्हि बन्न फटकी
बरखो बरख बितल देलियै ने हुलकी -२
तुलसी गोसाउन नित करथि उपास यौ, आर कत्ते दिन,
बंधु रहबइ .....

हीत, मित रीत प्रीत सहोदरों बिसारि देल
सोन सन माटि छोड़ि पर घर दुआरि धैल-२
आन घर अंगना के बनल किया दास यौ, आर कत्ते दिन,
बंधु रहबइ .....

अप्पन माटिक बंधु सगरे जे मान छइ
छप्पन भोग, पान, मधुर, मखान छइ-२
जग मे छइ अप्पन गौरवमय इतिहास यौ आर कत्ते दिन
बंधु रहबइ .....

जन्म भूमि सभ तरि स्वर्ग सँ महान छइ
अंत मुक्तिधाम गाम वेद परमान छइ-२
वैकुण्ठ धाम, गाम आउ नेऽ लगपास यौ, आर कत्ते दिन
बंधु रहबइ .....
छोड़ि गाम घर .....

2. लोकगीत

चलु अँगना मे मेंहदी लगाएब बहिना-२
आयल साओन-साओन-२
आयल साओन हिरदय जुराएब बहिना । चलु अंगना ....

रंग मेंहदी के लाल जेना उगिते सुरुज
तहिना चमकइ अपन सीथ लाले सिनूर-२
हम सभ रहि अखंड अहिबात ऐहिना । चलु अंगना मे ....

हम कमला नहाएब हम कोशी नहाएब
मुदा गंगा के जल सँ हम पुण्य कमाएब
नित गौरी ओ शंकर चढ़ाएब बहिना । चलु अंगना मे ....

गाएब गोसाउनि गीत राखब तुलसी सँ प्रीत,
ननदि गोतनी सँ मीत, नित रहब खिलि खिल - २
अपन हिरदय मे सजना आधार बहिना । चलु अंगना मे ....

उठब नित परात करब श्रेष्ठक प्रणाम,
राखब नैहर के लाज जग मे 'कमल'क नाम-२
अपन मिथिला केर सुन्नर व्यवहार बहिना । चलु अंगना मे ....
चलु अंगना मे मेहन्दी ....

●

3. लोकगीत (हास्य गीत)

रहब वर कुमारे, मरब बिख खाइ
यौ बाबू भैया बनबै ने घर जमाइ -२

उजड़ि उपटी मे होयत वियाह
सारि सरहोजि बिनु सासुर तवाह - २
मान-दान भेटत नेऽ बुझत जन हरवाही । यौ बाबू भैया .....

ओ खेतीह दूध भात हम मरुआ रोटी
देतीह ऊकटि हमरा हेतैन जों त्रोटि - २
हमर सख मनोरथ हुनक जी हजूरी । यौ बाबू भैया .....

हम पहिरब फाटल ओ नवसाड़ी
नितदिन बजारक ओ करती तैयारी - २
करती ने कहियो ओ हमर बड़ाइ । यौ बाबू भैया ....

जनम भरि सासुर के रहब खवासे,
मनक मनोरथ पत्नीक आशे - २
पत्नीक पिछलग्गू, सासुरक पहरेदारी । यौ बाबू भैया .....

दानी महादेव जग स्वयं भिखारी
सासुरक धन के ओ कयल ने पुछारी - २
गेला नेऽ हारि 'कमल' कहियो, राजा हिम द्वारि ।
यौ बाबू भैया बनबै नेऽ घर जमाइ
मरब वर कुमारे .....

●

4. लोक गीत

रे कागा, कागा रे कागा, साओन आयल
पिया बसे परदेश, दऽ, आ तों हुनका संदेश - २
रे कागा - कागा रे ....

पी-पी पुकारइ विरहिन पपिहरा,
तन मन मे आगि लागइ, उठे लहरिया-२
रहय ने मन परहेज-२
रे कागा कागा रे .....

टर-टर दादुर बाजइ चम चम बिजुरिया-२
झम-झम बरखे बदरा घोर अंनहरिया-२
जियरा मे उठय कलेश
रे कागा कागा रे .....

रहलहुँ बारहमास पियासल विरहिया - २
तैयो नेऽ सुधि लेल पिया निरमोहिया - २
नहि जानि 'कमल' मन के उद्देश -
कागा - कागा रे कागा ....
साओन आयल .....

●

5. लोक गीत (विरह)

सदिखन अहिं पर ध्यान लागल
सांझ दुपहरिया भोर,
हमरे शपथ अहाँ के प्रियतम
बनियौ जुनि कठोर ....-२ सदिखन

बारह मास तँ बिति चुकल अछि,
बिति रहल अछि तेरहम -२
अंगना कोण्टा नित्त निहारि
जेना निहारय विरहन - २

सेजक उपर शूल गड़इ अछि
आँखि सँ झरहय नोर - २
हमरे शपथ .... बनियौ .... सदिखन

वयस उन्नैसम बिति चुकल अछि
आब चढ़ल अछि बीसम - २
मनक बात हम ककरा कहबइ
लक दक रभसल यौवन - २
एक भँवरा बिनु कलि पियासल
निज रसगर पोरे पोर - २
हमरे शपथ .... बनियौ ..... सदिखन

उमड़ि धुमड़ि क' मेघा बरिसल,
लगा देने अछि झहरी - २

पी पी पी पी रटइ पपीहा
चम चम चमकय बिजुरी - २
साओन मास तन दहकि रहल अछि
जल बनि गेल इन्होर .....
हमरे शपथ .... सदिखन

कोन कसूरे बिसरि गेल छी
नहि जानि ह्रदयेश - २
तनिको दया क' लेश रहत तँ,
छोड़ि देबै परदेश - २
गामहि सुख दुःख संगहि काटब
''कमल'' सुनं करजोरि ।

हमरे शपथ अहाँ के प्रियतम बनियौ जुनि कठोर -
सदिखन ....

●

6. लोक गीत

मेला मे कंगना हेरायल गे बहिना
सजना बिगड़ि गेला ना - २

सासु बिगड़ली, ससुर बिगड़ला - २
भैसुरजी कयल हंगामा गे बहिना - २
सजना बिगड़ि गेला ना ।
मेला मे .....

गोतनी हमर सभ करय कन फुसकी
ननदोसि ननदी दैछ मन मुसकी - २
देवर जी दैछ नित ताना गे बहिना - २
सजना बिगड़ि गेला ना
मेला मे ....

गामक सखि संग मेला देखऽ गेलियै
कंगना हेरा जेतै हम ने बुझलियै - २
कोने रंग रसिया के भटकल नयना - २
सजना बिगड़ि गेला ना
मेला मे ....

सासुजीक कीनल छलै ओ जे सोनमा
तकरा गढ़ादेल पिया मोर कंगना - २
चारीम रातिक छलै मुँह बजना
सजना बिगड़ि गेला ना
मेला मे ......

प्रेम सन धन नहिं छै एहि जग मे
हे मैथिल ललना जुनि ग्लानि करु मन मे - २
चोर रंगरसिया 'कमल' तोर बलमा
कंगना चोरा लेल ना
मेला मे .....

●

7. लोकगीत (विरहन)

नीर बिनु मीन जेना रहि-रहि तड़पइ
हमरो करेजा पिया अहाँ बिनु तरसइ (टेक)

राति अन्हरिया साओन भदबरिया,
बरखै बदरिया दिने दिन रतिया - २ दिने-दिन रतिया-३
रहि रहि बिजुरिया केना जे चमकइ ।
हमरो करेजा पिया .....
नीर-बिनु मीन जेना ....

सासु नेऽ ननदिया, बालीरे उमेरिया,
सून सेजरिया काटि रे अहुरिया - २ काटि रे अहुरिया -
मोन केर बतिया हम ककरा सँ कहबइ -
हमरो करेजा पिया .....
नीर बिनु मीन जेना ......

बारह बरखिया कोन्टा अटरिया
पिया निरमोहिया ताकि हम बटिया - २ ताकि हम बटिया -
रहि रहि अंखिया केना जे झहरइ
हमरो करेजा पिया .....
नीर बिनु मीन जेना .....

कनक कटोरिया, अपनो नगरिया,
'कमल' बिदेशिया छोड़ि नौकरीया- २ छोड़ि नौकरीया-३
संगे संग गुजरिया हम गामहि जे करबइ ।
हमरो करेजा पिया .....
नीर बिनु मीन जेना .....

●

8. लोकगीत (मायक ममताक गीत)

कोखि के ललनमा, हमरे सुगनमा,
कौने दुर देश गेलह, सुन्न कऽ अंगनमा-२
रे पूता ऽऽऽऽऽ
रे पूता, तोर बिनु गोदिया हमर लागए सून-सून रे,
लागय सून सून रे
कोखि के ललनमा .....

कार्तिक महिनमा, तोहरे बहिनियाँ,
निपि झलकेलकइ घर, अरिपन दऽ अंगनमा-२
रे पूता ऽऽऽऽऽ
रे पूता तोर बिनु भरदुतिया ओकर, लागए सून सून रे,
लागय सून सून रे
कोखि के ललनमा .....

बहु लक्ष्मीनियाँ बरख दिननमा,
बटिया निंहारय तोहर,
थकित नयनमा । २
रे पूता ऽऽऽऽ
रे पूता तोर बिनु भवनमा हुनकर लागए सून सून रे,
लागए सून - सून रे
कोखि के ललनमा .....

तोहर लंगोटिया, सभ संगीतुरिया
पुछय छह कुशल नित अयबह तो कहिया-२
रे पूता ऽऽऽऽऽ
रे पूता, तोर बिनु गाम बटिया सगर, लागए सून सून रे,
लागए सून सून रे
कोखि के ललनमा .....

आरे पूता आरे आ,
अपन माटि के भाल लगा
स्वर्ग सँ सुन्नर देश तोहर, तजि परदेश तो शीघ्रहि आ-२
रे पूता ऽऽऽऽ
रे पूता तोर देखि अंगनमा हमर लागत भरपूर रे, लागत भरपूर रे
कोखि के ललनमा .....

9. लोकगीत (प्रणय गीत)

नट : हे ऽऽऽऽऽ हे ऽऽऽऽ
भोरे भोरे देखलहुँ जे तोर, कोमल तन गोर
से हियरा मे गड़िये गेलइ, हमरो मन डोलिये गेलइ- डोलि गेलइ (टेक)
हे ऽऽऽऽ हे ....
हिरणी के चालि चलैते डगर, केना लच-लच लचकौ जे तोहर कमर (टेक)
तोहर जुआनी के देखिते हमर, जेना शान्त समुंदर मे उठए लहर - २
हे ऽऽऽऽ हे ...... हे
नामी नामी लट तोर कारी, नयन मदकारी
से हियरा मे गड़िए गेलइ, हमरो मन डोलिये गेलै ।
भोरे भोरे .....
हे ऽऽऽऽ हे ऽऽऽ हे ....
गोरे गोरे गाले पर कारी तिलवा, कोन पगला के तों गे जरौलें दिलवा (टेक)
रभसल अंग तोहर पोरे-पोर, कोना फुरसति मे छलै तोरा ले दैवा-२
हे ऽऽऽऽ हे ऽऽऽ हे ....
लाले लाले पाने सन पातर, अधर तोर कातर,
से हियरा मे गड़िये गेलइ, हमरो मन डोलिए गेलइ ।
भोरे भोरे ......

नटी : हे हे ऽऽऽऽ हे ऽऽऽ
भोरे भोरे देखलहुँ रे बौआ, रे कारी कारकौआ
से हियरा मे अखरियै गेलइ, हमरो मन झुसिये गेलै
झुसि गेलइ, हमरो मन झुसिये गेलइ । भोरे (टेक)
हे हे ऽऽऽऽ हे ऽऽऽ
ताक ने कखनो तो हमरा इम्हर, हम बाला एखन मोर काँचे उमर-२
ऐना मे मुखरा अपन देखि आ, छोड़ हम्मर पछोड़ जुनि छेक डगर-२

हे SSSS हे हे SSSS
मोने मोने खा ले रे लड्डू, रे पगला निखट्टू,
हियरा मे अखरिये गेलइ हमरो मोन झुसिये गैलै - २
भोरे भोरे ......
हे SSS हे हे SSSS हे

नट : कोन मुँहे बजलै तोइ गै बात
अपन हियरा के देख पुनि हमरा दिस ताक-२

नटी : सत बजै मे छै लागइ जे लाज
कोना कहबौ इ बात थिकइ मोनक राज-२
हे SSSS हे SSSS

नट : भोरे भोरे देखलहुँ गे सजगी, हमर मन मोहिनी-२

नटी : भोरे भोरे देखलहुँ रे सजना, हमर मन मोहना-२

कोरस : हियरा मे गड़िये गेलइ
हमरो मन डोलिये गेलइ ।।

●

10. प्रणय (मिलन गीत)

नट : जनम-जनम सँ प्रीत अमर छै, फिरलहुँ बेदी सात
आइ चतुरथीक राति हे सजनी, करू हमरा संग बात-२

नटी : साक्षी छै धरती जल पावक, सुरुज चान बसात,
पुनरजनम मुलाकात यौ प्रियतम, आइ चतुरथीक राति ।

नट : आइ चतुरथीक राति हे सजनी, करु हमरा संग बात ।

चान, सुरुज मे दाग आगि छै, काँटे लागल फूल गुलाब,
सजनी अहाँ के रूप अनुपम, छी बेजोड़ कोनो ने जबाव-२
बैसल हिय मोर बामकात हे सजनी, करु हमरा संग बात
आइ चतुरथीक राति .....

नटी : सोना चानी गहना गुड़िया, छइ तकर हमरा नहिं चाहि
चुटकी भरि सिनूर वसन तन, पिया करब समुचित परवाहि-२
हम पुनि भेलहुँ अहिवाति, यौ प्रियतम, आइ चतुरथीक राति

नट : आइ चतुरथीक राति हे सजनी, करु हमरा संग बात-२

करब माफ हमरा सँ सजनी, होए कदाचित कहियो भूल
पारिबारिक जीनगीक बाट पर, कखनो फूल तँ कहियो शूल-२
जीनगी कतोक झंझावात् हे सजनी, करु हमरा संग बात
आइ चतुरथीक राति हे सजनी - करू .....

नटी : हो कसूर कहिं भूल चूक मे, करबइ प्रियतम हमरो माफ
अर्द्धांगिनी हम अहिंक भरि जनमक, जे बुझबइ से करब निसाफ-२
हम अबला जनि जात यौ प्रियतम, आइ चतुरथीक राति

नट : आइ चतुरथीक राति हे सजनी, करु हमरा संग बात
सुख दु:ख मिलि हम संगहि कटबइ, कियो ने रहबइ कहियो भीन-२
घर आँगन के स्वर्ग बनेबै हँसी, खुशी मन हो ने-मलीन

नटी : जीनगीक नव शुरुआत यौ प्रियतम, आइ चतुरथीक राति
आइ चतुरथीक राति यौ प्रियतम, करू हमरा संग बात ।

कोरस : करू हमरा संग बात .....
आइ चतुरथीक राति .....

11. लोकगीत

बरखा बरखइ मुसलाधार,
चुबइ सगरे घर ओसार
कोना रहबइ पिया बिनु एहि घरबा मे - (टेक)

सगरे अंगना घर बहार,
बहइ कमला कोशी धार
कोना रहबइ पिया बिनु एहि घरबा मे । बरखा .....

साओन भदवरिया, राति अन्हरिया
घन गरजइ, खन चमकइ बिजुरिया - (टेक)
पी-पी पपीहा पुकार, बेंगवा बाजव टरकार,-२
कोना रहबइ .... बरखा बरखइ .....

बाली उमर मोर संगनेऽ ननदीया
ककरा सँ कहबइ जे मोनकेर बतिया-२
हिया धधकइ अंगार, यौवन जाय नेऽ सम्हार-२
कोना रहबइ .... बरखा बरखइ .....

शूल गड़इ छै देखि फूल सन सेजिया
ऐहन कठोर किया पिया निरमोहिया-२
जुआनी एतै ने घुरि आर 'कमल' करु तनिक विचार-२
कोना रहबइ हम पियासल एहि उमेरिया मे ।
बरखा बरखइ .... चुबइ सगरे ....
कोना रहबइ ....

12. आधुनिक लोकगीत

चोरि चोरि चोरि चोरि,
हिया मोर भेलइ चोरि,
लागल बिलैया, ओहिना-२
कोना के भेलै चोरि - १ । चोरि चोरि .....

सूतलि छलहुँ रे दैवा, अपन भवनमा,
कोन दय ढुकलइ रे चोरबा बइमनमा-२ चोर बइमानमाँ - २
सभ किछु ठीके ठाम हिया एक भेलइ चोरि-२ चोरि-चोरि .....

तकलहुँ रे बाड़ी-झाड़ी घर पछूआर मे
कतहु नै भेटलइ हमरा पड़लहुँ विचार मे-२ पड़लहुँ विचार मे-२
ककरा सँ कहबइ जे कियो नहि हित मोरि-२ चोरि-चोरि .....

थाना मे नालिस देलियै, पुछलम दरोगा-२
कोन मुँह सूतल छलियै, केम्हर झरोखा-२
किछुओ नेऽ बुझि सकलइ, चलि गेलइ कलजोरि-२ चोरि-चोरि

सोलह बरख सँरै-हिया रखलहुँ सम्हारि के,
भूल मे अचके चोर ल-गेलइ बझहारि के-२ लगेलै बझहारि के-२
तड़पी हम मीन जेना तन सुन्न लागइ मोरि २
चोरि-चोरि.....

ठीक दुपहरिया रे एक दिन फोलिते झरोखा,
श्याम वदन रे एक ''कमल'' सरीखा-२, 'कमल' सरीखा रे-....२
मंद मुस्कान नैन कनखी सँ केलकै चोरि ।
चोरि-चोरि .....
हिया मोर भेलइ .....

13. लोकगीत (विरहन)

काटइ सँ कटइ नेऽ तम, अमावश के,
की कहबइ राति, अन्हरिया के २
चातकी पियासल एकसरि एकटक
हम ताकी बात इजोरिया के (टेक) काटइ सँ .....

आकाश कतेको तारेगण, तम तइयो दूर ने होइ मुदा
डिबियाक इजोत करए लटपट, हम आँचर अढ़ बचौने सदा-२
हम कतेक सम्हारब डिबिया के-२
की कहबइ पवन पुवरिया के । काटइ सँ .....

साओने मासक मेघा बरिसल, घनघोर चहुँ दिसि आंगन मे-२
दामिनी चमकल, दादुर टर-टर, नाचल मोर वन कानन मे-२
झहरय नयना सँ नीर हमर-२
की कहबइ कारी बदरिया के । काटइ सँ .....

फागुन आयल कोकिल पिहकल, शौरभ सँ गम-गम वन उपवन-२
होरी के रंग सँ लाल गगन, कलि खिलल चहुँ मदमस्त मदन-२
बिनु प्रियतम संग केहन होरी-२
की कहबनि पिया निरमोहिया के । काटइ सँ .....

छइ चीर हमर सगरे मसकल, सीबइ केम्हर सगरे फाटल-२
छइ गरीबक दिन पहाड़ बनल, जेम्हरे ताकि ओम्हरे दरकल-२
हम कतेक सुनाएब दैव तोरा-२
के सुनतइ बिरह बहुरिया के । काटइ सँ .....

छइ प्राण जे हुनके पर अटकल, ओ हमर ह्रदेश्वर यायावर-२
परवास मे परवस पड़ल ''कमल'', छै अदिष्टक दोख हमर-२
छइ तन कसमस रभसल यौवन-२
केना कटबइ, वारि उमेरिया के । काटइ सँ .....

14. लोकगीत (प्रणय गीत)

हे .... ऽऽ हे ऽऽऽ ......
वाण नयना के न मारु, तनि प्रेम सँ निंहारु-२
बैसल अहिंक निंहारी, मोन गेलइ ललचाए-२
भोर दुपहरि बिति गेल, साँझ परल जाए-२
सुरज मुखि हे चान मुखि-२
हियरा दियरू जुराय ।
भोर दुपहरि ....
वाण नयना मे ......

खोलि के खिड़की करी अंगैठी, होइतहि अन्हरभोर-२
ओंघायल मन हल्की मुस्की, यौवन आगि अंगोर -२
हे ऽऽऽ हे ऽऽऽऽ हे ऽऽऽ
देह जनि अंगराबू, मुख जनि मुस्काबू-२
कहिं बिनु मौसम कलि खिलियो नेऽ जाय ।
भोर दुपहरि .....
सुरज मुखि हे चान ......
भोर दुपहरि ......
वाण नयनाक .....

ओझरल छितरल केस झमटगर, जेना घुमक्कर बदरा-२
लचक हिरनीक सन कमर पतरकी, मरए कतेको भंवरा-२
हे ऽऽऽऽ हे ऽऽऽऽ
कटि, जनि लचकाबू, लट जनि विखराबू-२
कहिं बिनु मौसम बदरा बरखियो ने जाय....
भोर दुपहरि .....
सुरज मुखि हे चान .....
वाण नयनाक ......

पागल मोन थकित नयन बीच, विसरल भूख पियास-२
एक टक सँ अहिंक निंहारी करु तनिक विसवास-२
हे ऽऽऽऽ हे हे ऽऽऽऽ हे
मोन कत्ते परतारू मुदा नहि 'कमल' काबू -२
कहि पागले मोन छइ कतहु बहकियो ने जाय ।
भोर दुपहरि .....
सुरज मुखि हे चान ......
वाण नयनाक ......

●

15. लोक गीत

वाम भेल विधिना, घर छोड़ि सजना-२
दुर देशे खोजथि, रोजगार छै गे बहिना
पिया बिनु अंगना अन्हार, गे बहिना
केहन भेल हमरो कपार - (टेक)

पुरुब पश्चिम सभतरि गेला,
पर देशे लोक करए जे कुहेला - २
अपनहिं माटि ले सभ जे लड़ै छै-२
सहथि कतेको अत्याचार छै गे बहिना
पिया बिनु अंगना ......
गे बहिना केहन भेलै ......

सासु ससुर बूढ़, सासुरहि ननदिया
ककरा सँ कहबै गे मोनक बतिया-२
अपना पर हमरा जे बितलइ बितै छै-२
बिसरल ओ मायक दुलार छै गे बहिना
पिया बिनु .....
गे बहिना केहन .....

आब नेऽ हुनकर एको-बात सुनबनि -२
आपस अपन गाम आबऽ ले कहबनि -२
अपनहि माटि पर हम जे लोटबै-२
लिखल पाती हजार छै गे बहिना
पिया बिनु अंगना ....
गे बहिना केहन .....
हमरा ने चाही गे कंगना नेऽ चुनरी-२

सिथे सिनूर पुराने बरू गुदरी-२
ओ धरथिन लागन, हम बनबै किसानिन-२
परती पड़ल खेत पथार छै गे बहिना
पिया बिनु अंगना .....
गे बहिना केहन .....

ककरो सँ उर्बर गे धरती अपन छै-२
सोना उपजेबै ई मोन मे लगन छै-२
कदबा मे रोपनि संगे मिलि गयबै-२
साओने मेघा मल्हार छै गे बहिना
पिया बिनु अंगना
केहन भेल हमरो .....
गे बहिना केहन .....

जनि हो उदास हे मैथिल ललना-२
पूरण होयतह 'कमल' मनकामा-२
बिततइ अमावश भगतै अन्हरिया-२
चाने नित अंगना उजियार तोर ललना
सतरंगी सपना साकार
हे ललना, साजन अओथिन तोहार
सतरंगी सपना साकार
पियाबिनु अंगना अन्हार-
गे बहिना केहन भेलइ हमरो कपार ।

●

16. लोकगीत (मिथिला बाढ़िक बिभीषिका पर) बिरह गीत

मिथिला नगरिया सीता के अंगना-२
मैथिल सभ धुनइ कप्पार छै गे बहिना ....
जनमारा अबिते दहार, गे बहिना दुःखक नहि छइ पाराबार (टेक)

बरखे बरख पर बाढ़ि अबै छै
लोक मरइ छै घरदुआरियो भसै छै ।

कमला आ कोशी के कोनो नेऽ ठेकाना-२
बाढ़िक वेग वेसम्हार छै गे बहिना
जनमारा अबिते दहार, गे बहिना दुःख ......
मिथिला नगरिया .....

रोपनि मे पानिक अभावे रहै छै -२
चास मे पटौनीक बेहाले रहै छै । - २
किसानी जीनगी बरबादे ओहिना-२
दाही जे कखनो, सुखाड़ छै गे बहिना -
जनमारा अबिते दहार गे बहिना दुःख ......
मिथिला नगरिया ......

ककरा सँ कहबै गे के सुनतै विपतिया-२
उजड़ि उपटि बैसल बीचहि बटिया-२
भूखे पियासे कटए दिन रैना - २
नेन्ना सभ काटइ बपहारि छै गे बहिना ....
जनमारा अबितै दहार गे बहिना दुःख .....
मिथिला नगरिया ....

कोनो मदति नेऽ खरातो भेटै छै-२
नेतवा के भाग निज पेट भरै छै-२
नहिं देखै दिल्ली ने सुनइ छै पटना-२
एक अन्हरा, एक बहिरा सरकार छै गे बहिना -
जनमारा अबिते दहार गे बहिना दुःख ......
मिथिला नगरिया ......

आब ककरो हम भोट नेऽ देबै-२
अपना दुआरि दिसि टपऽ नेऽ देबै-२
नेतवा के झाँटब मारि सतबढ़ना-२
सभ मिलि करबइ प्रतिकार छै गे बहिना .....
जनमारा अबिते दहार गे बहिना दुःख .....
मिथिला नगरिया ......

आब ने हम गे बिहारी कहेबै-२
अपन फराक सरकार बनेबै-२
मिथिला जे स्वर्ग सन देखल हम सपना
'कमल' हाथ सत्ता अधिकार छै गे बहिना-
जनमारा अबिते दहार
गे बहिना दुःख नेऽ छइ पाराबार ।
मिथिला नगरिया .....
मैथिल सभ धुनइ .....
जन मारा ......

●

17. लोकगीत (कोरोना महामारी)

आफत एलै रोग कोरोना, बंधु की करी
अपग्रह परलै सभक पराना बंधु की करी-२
बंधु की करी यौ मीता की करी-२
आफत एलै .....

घर घर दुबकल लौक डाउन मे, लोकक बन्न केबाड़ यौ-२
लोक जे अटकल परदेशे में बैसल बेरोजगार यौ मीता-२
राशन भेटै छै नेऽ खाना - बंधु की करी
बंधु की करी यौ मीता की करी-२
आफत एलै ......

पसरल संक्रमण देश-विदेश में मचलै हाहाकार यौ-२
लाखो लोक जे काल ग्रसित भेल लाखो लाल बेमार । बंधु-२
शैतानी चीन काज कायराना बंधु की करी -
बंधु की .... यौ मीता ....
आफत एलै ......

रेल, सड़क, सभ बन्न भेल छै, गगन यान सभ बन्न यौ-२
पहरा दै छै सगर सिपाही, बाट घाट सभ सुन्न । बंधु-२
शहर, गाम लगै वीराना, बंधु की करी
बंधु की .... यौ मीता ....
आफत एलै ....

मंत्री, मुखमंत्री के भाषण घोषणा शंख डपोर - यौ -२
जनता के मुख परलै फुफरी, ओकर लाल मुंह ठोर । बंधु-२
भरै छै अपन घर खजाना । बंधु की करी-२
बंधु की .... यौ मीता २
आफत एलै ....

छूत रोग महामारी ई मनुख भेल मजबूर यौ-२
अपन हीत मीत, कुटुंव सँ कमल भेल जे दूर । बंधु-२
केहन विपैतक एलै जमाना । बंधु की करी -२
बंधु की करी - यौमीता की करी-२
आफत एलै रोग ....

●

18. हास्य लोकगीत

बेटा खातिर मैया के उलहन देला बाबू
बेटा भऽ गेलइ काबू सँ बेकाबू (टेक)

पढ़ैक नामे नहि, मोबाइले टा घोटइए
नित दिन माथ दर्द बहाना करैए ।
लागैए फेसबुकिया छौड़ी कऽ देल कै जादू
काबू सँ बेकाबू । बेटा ......

अहुँ पिया ओहने, केलियै मनमानी
परौसीन के आँखि मारि, नित छेड़खानी-२
बापे सन पूता भेलै, हो ऽऽऽ .... बापे सन पूता भेलै
ओहने बेसम्हार । काबू सँ बेकाबू । बेटा खातिर ....

बक झक मे हुअए लागल, दुनु मे झगड़ा
बेटा छौड़ाएत तँ चुप पहिने ककरा - २
बाप हाथ लाठी देखि हो ऽऽऽ—
बाप हाथ लाठी देखि, माय हाथ झाड़ू .....
दुनु ''कमल'' बेकाबू

बेटा खातिर ......
बेटा भऽ गेलए .....

●

19. हास्य लोक गीत

हे गै लोल ऽऽऽ, तोहर बोल ऽऽ, जेना ओल ऽऽऽ,
सुनि कब-कब लगै, देह भक-भक करै (टेक) -२
कखनो मिसरीक चासनि घोल ऽऽ घोल ऽऽऽ
हे गै लोल .... तोहर बोल .....

सोलहे बरखे उमेरिया मे,
बज्जर खसौलेऽ बजरिया मे -२
लट बिखरौने तों, नागिन सन्,
लह-लह चलै छै डगरिया मे - २
तनिकों कर तो लाज, छोट बड़का लेहाज-२ (टेक)
तोहर चरचा छौ, गामे गाम - टो ऽऽ ल टो ऽऽऽ ल.....
हे गै लोल .... तोहर बोल .....

विधिना के अनुपम तों रचना गे,
भँवरा सभक मन वसना गे-२
गहुँआ के रंग तोहर काया छौ
मद सँ भरल तोहर नयना गे-२
जुनि चल तो उतान, दुनियाँ छै बेइमान-२
क' देतहु निपत्ता, गोल ऽऽ गोऽऽल । हे गै लोल .... तोहर

बुझलहुँ तोरा मुँह ने जाबी छौ, अपना युवानी पर दाबि छौ-२
छें तो नेऽ ककरो के कहला मे,
मदकार तोरा पर हावी छै-२
तनिक दुनियाँ के देख, लोक रित-हित परेख-२
खुजि जेतहु जे एक दिन, पोलऽऽल - पोलऽऽल । हे गै लोल....

कतेक बुझेबौ गे तोरा हम, दैबक बनाओल जे जोड़ा हम-२
लगलै सिनेह जे तोरा सँऽ, कतेक करबौ निहोरा हम-२
दे हाथ मे हाथ, गाबी मिलन गीत साथ-२
इ जीनगी 'कमल' अनमो ऽऽऽल - मोऽऽल ।
हे गै लोल - तोहर बोल ......

●

20. लोकगीत (मिलन गीत)

तकलहुँ तोरा इम्हर ओम्हर
नट : नहिं जानि तो कत्तऽ केम्हर-२
भोर साँझ छै धेयान तोरहि पर
पथरा गेलइ नयन हमर,
मोन नहिं लागल हमरा, तोरहि वियोग मे - २
कटइ छी अहुरिया आमक गछिया-२
आमक गछिया गे ठीक दुपहरिया-। तकलहुँ .....

तकलहुँ तोरा टोल मे
आस पास पड़ोस मे
नहिं जानि तौ कतय नुकयलैंऽ
बैसल छें कोन दोग मे-२
मरइ छी नेंऽ जीवइ छी हम
तोरहि प्रेमरोग मे-२
कटइ छी अहुरिया आमक गछिया-२
आमक गछिया गे ठीक दुपहरिया । तकलहुँ .....

नटी : जखनहि नयना चारि भेलइ
हमरो हाल बेहाल भेलइ-२
निन्न आँखि सँ भेलइ निपत्ता
जीनगी जी जंजाल भेलइ ।
तोरहि नाम जापिरे हमहुँ,
होस आ बेहोस मे - २
फाटइ जे छतिया -दिन अधरतिया-२
दिन अधरतिया रे ठीक दुपहरिया-२
नट : तकलहुँ तोरा ....
नट : जनम-जनम सँ प्रीत हमर
रहतै जा सागर अँबर

चान सुरुज जा रहतै पिरथी,
ता धरि रहतै प्रेम अमर ।
नेहक नेऽ बान्हन टूटल प्रिये कोनो युग मे

नटी : मोर मन वसिया, पियासल अंखिया
अंक लगा ले रे मोर रंगरसिया,
मोर मनवसिया रे ठीक दुपहरिया

नट : तकलहुँ तोरा ......

नट : करबै नेऽ हम ककरो डए
नटी : लोक लाज सभ करबै तर
नट : एकहि संगे जीबै मरबै
नटी : मधुर भेटइ वा भेटइ जहर
नट-नटी : डोर नेऽ टूटइ प्रियतम
पिरीतक संयोग मे २

नटी : सुनरे सिनेहिया
नट : मोर तो बहुरिया
नटी : सीथ दे सिनूरबा
नट : पहिरि ले चुनरिया
पहिरि ले चुनरिया, लाले रंग चूड़िया
लाले चुनरिया गे, ठीक दुपहरिया ।
कोरस : हम तोहर गे तो हमर
मिलन गीत गेबै सस्वर
नेह कऽ देबै नव परिभाषा
गाम गाम शहर नगर ।
जीनगी बितेब ''कमल'' थोड़हि संतोष मे -
आमक गछिया ठीक दुपहरिया

●

1. गीतिका

हम परवासी घर, दुआरि छोड़ि आयल छी
उर्वर सन खेत पथारि छोड़ि आयल छी । (टेक)

बाझि मृगतृष्णा मकराक महाजाल मे,
तामक लिलसा मे कनक थार छोड़ि आयल छी । हम परवासी...

शहरक चकचौन्हि असहय दौग भाग मे,
अपन गाम लोक सरोकार छोड़ि आयल छी । हम परवासी....

नीर बिनु मीन जेकाँ तरपइ परान नीत
पुरखाक खुनल अगम हम इनार छोड़ि आयल छी । हम परवासी...

दाम चुकाबी हम इजोत आ बसात के
चान सुरुज शीतल वयार छोड़ि आयल छी । हम परवासी ...

ककरो नेऽ फुरसति छइ सुधि लेतै ककरो,
अपन भरल अंगना परिवार छोड़ि आयल छी । हम परवासी....

आनकं भाषा मे बात करी सांझ भोर हम
अपन मधुर भाषा संस्कार छोड़ि आयल छी । हम परवासी....

विसरल 'कमल' गामक पावनि तिहार जे
लाख ऋण गामक दुलार छोड़ि आयल छी
हम परवासी.....
उर्वर सन.....

●

2. गीतिका

घोघ तर के रूप देखि, चान अकचका गेलइ
लाजे मुख नत भेल, बदरिये नुका गेलइ ।।

गुमान छल गुलाब के गमकै उद्यान मे
मलयालिनि लाजवंतीक देखिते मुरुझा गेलइ ।।

गुमान छल शराब के मताबै जहान के
मदनयन मधुमालिनीक देखिते सुखा गेलइ ।।

हिरनीक गुमान छल लचकि चलै बाट मे
कमची कटि कामिनीक देखि चालि बिसरा गेलइ ।।

कुहुकय गुमाने मन कोकिल नित तान मे
स्वर सुनिते कोकिलाक बोल मिझरा गेलइ ।।

रुप देखि, मोहिनीक दैब पड़ल सोच मे
साँच ''कमल'' कोन छलै जाहि मे गढ़ा गेलइ ।।

●

3. गीतिका

छिलकइ गगरी, चलैत बाटे मे,
लचकइ कमरी, चलैत बाटे मे । टेक

चान मुखरा तन संगमरमर,
तिरछी नजरि चलैत बाटे मे । छिलकइ गगरी .....

प्यासे व्याकुल, कत्त मस्त भ्रमर
रगड़ि झगड़ी चलैत बाटे मे । छिलकइ गगरी .....

रहए एतवे एकर चर्च सगर,
परी सुन्नरी चलैत बाटे मे । छिलकइ गगरी ....

'कमल' सौभाग-पहिरत इ जकर,
चूड़ी चुनरी, चलैत बाटे मे ।
छिलकइ गगरी .....
लचकइ कमरी .,...

●

4. गीतिका

कौतुक सँ भरल, बेसाहल जीनगी
नेऽ हँसैते बनइ, नेऽ कनइते बनइ -२

बीच कंठे फँसल हलाहल जीनगी
नेऽ उगलिते बनइ नें घोटैते बनइ-२ । कौतुक सँ .....

नीर बिनु जेना, मीन, मरु तृष्णा हरीण
जेना नाचइ भुजंग ओ सपेराक बीण-२

पग घुँघरु बान्हल, गछारल जीनगी-२
नेऽ नचइते बनइ ने तरपिते बनइ-२ । कौतुक सँ .....

रिति नेहक मूल, सोचि रोपल हम फूल-२
विपरीते मुदा डेग डेगहि त्रिशुल - २ । .....

फूल काँटे भरल हताहत जीनगी - २
ने चलइते बनइ नेऽ ठमकिते बनइ-२ । कौतुक सँ .....

जीनगीक धार प्रवल, जाय वेगहि बहल,
बिनु कर पतवार, अन भरोसे 'कमल' - २ । ....

जल डगमग भँवर लवालव जीनगी-२
ने डूबइते बनइ नेऽ उबरिते बनइ-२ । कौतुक सँ .....

कौतुक सँ भरल ....
बीच कंदे फँसल ....

5. गीतिका

आइ जीनगी जेना लागइ पहाड़ सन
लागइ मुहथरि पर यम जेना ठाढ़ सन । आइ .... (टेक)

फँसल भँवर बीच ऊब-डूबकर नैया
बिनु माँझी जीनगी जेना लागइ अन्हार सन । टेक आइ ....

हकासल पियासल चलैत अनंत बाट मे
सरोवर सुमुंदर जेना लागइ सुखाड़ सन । टेक आइ .....

ककरो सँ कियो नहि रखने जे मतलब
मनुक्ख लागइ जेना छुतहर बेमार सन । टेक आइ .....

"कमल" सजल नैन नित करतल निहारय
करम जेहने तेहने जे फलदार सन । टेक आइ .....

6. गीतिका (कोरोना)

जनि निकलू नेऽ कतहु, अकारण भवन,
छइ पसरल सगर संक्रमण कण-कण-२ (टेक)

दूर भेलइ मनुक्ख, मनुखहि छुतहर
मीत मानि नेऽ हीत स्वजन - परिजन -२

सभ पावनि तिहार गाम नोते पुछारि,
परहेजे मे राखू एखन तन-मन ।।

प्राण बांचत पुनि सभ अहिंकेर थिक
चास, कोठा अटारी धन अवनि गगन ।।

तम छँटतइ अमावश के निश्चय 'कमल'
पुनि हेतै इजोर चाने पूनम आंगन ।।

जनि निकलू ......
छइ पसरल सगर ....

●

7. गीतिका

एक फूल खिलल सरसीज कमल
दु:ख की नेऽ सहल, नहिं जाय कहल ।।

धरणीक गरभ तल पंक दल दल
थकुचाइते रहल नित पद दलमल ।।

छल मूक बनल, नित नयन सजल
रहितहुँ घायल, चित चैतन्य बनल ।।

अरुण ऊगल, मुकुलित शतदल
अरविंद, सरोज, सगर चतरल ।।

चरण कमल दैव शीश चढ़ल
जीनगी ''कमलक'' बुझि सफल रहल ।।

●

8. गीतिका

नयन लड़ल मोर नेहक नगर
ओ लजाइते रहली, हम मुस्काइते रहलहुँ ।।

नयन हुनक सिंधु नेहक उमरल,
ओ उमरैते रहली, हम चुभकैते रहलहुँ ।।

नयन हुनक मद नेहक भरल
ओ पिबबिते रहली, हम पिबैइते रहलहुँ ।।

नयन हुनक नेहक आशा महल
ओ सजबिते रहली, हम देखैते रहलहुँ ।।

नयना हुनक गीत नेहक "कमल"
ओ गबैते रहली, हम सुनैते रहलहुँ ।।

●



रचनाकारक परिचय

नाम : श्री कामेश्वर झा

साहित्यिक नाम : श्री कामेश्वर झा 'कमल'/'कमलजी'

पिता : स्व० दयानन्द झा

माता : स्व० गुलाब देवी

जन्म : 01 नवम्बर, 1962

पैतृक : ग्राम व पोष्ट – मिथिला दीप, भाया– झंझारपुर, थाना–मधेपुर, जिला – मधुबनी (मिथिला), बिहार

शिक्षा : प्राइमरी स्कूल– अंधराठाढ़ी। मिथिला दीप,
माध्यमिक– महादेवपुरण उच्च विद्यालय,
झंझारपुर–बर्ष–1979 ई० (उत्तीर्ण)
उच्च माध्यमिक– मारबाड़ी कॉलेज,
किशनगंज–बर्ष–1982-83 (अपूर्ण)

पेशा : सुलभ इन्टरनेशनल सामाजिक सेवा संस्थान, कोलकाता मे (वर्तमान) कर्यरत।

रुचि : मातृभाषा मैथिली सँ आंतरिक नेह पढ़ब–लिखब, कविता, कथा, गीत–नाद मे विशेष रुचि।

प्रकाशित पोथी : 'बाट एक पेरिया' कविता संग्रह (2015)
विभिन्न मैथिली पत्रिका मे यथा समय, गीत, कविता, कथा, बालगीत प्रकाशित।

साहित्यिक सक्रियता : 1998-99 सँ।

विशेष उपलब्धि : साहित्य अकादेमी दिल्ली द्वारा कोलकाता मे आयोजित कवि गोष्ठी मे आमंत्रित, वर्ष– 2004 आ वर्ष 2010 मे।

सम्पर्क : 29 बी० एण्ड सी० स्कूल रो, भवानीपुर, कोलकाता–700 025
मोबाइल : 9434485762

ISBN : 978-81-931089-4-9